04- भोजपुरी के तुलसीदास रामजियावन दास बावला

05- विज्ञापनः भूमिका एवं उसकी उपयोगिता

06- 700 से अधिक प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

07- 'पानी' पर कोई फिल्म बनाना क्यों नहीं चाहता!

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 02 जून, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 225 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

मौसम के रंग

भोजताल, राजा भोज और ज्येष्ठ की एक शाम

फोटो- गिरीश शर्मा

सुप्रभात

एक सपना टूटता है
कि दूसरा शुरू हो जाता है
बीच बीच में टूटती है नींद
तो डराता है अंधेरा
लगता है उससे तो नींद भली
फिर फिर लगती है नींद
फिर फिर आते हैं सपने
लगता है अंधेरा भी कोई सपना ही था !
जैसे उजाला एक सपना
जैसे हँसना एक सपना
वैसे ही रोना भी एक सपना
जैसे मिलना एक सपना
वैसे ही बिछुड़ना भी !

सोनल शर्मा

खत्म हुआ 2024 का चुनाव

अब नतीजों का इंतजार

● हिमाचल-झारखंड में जबरदस्त वोटिंग,ओडिशा-बिहार पिछड़े ● यूपी में वोट देने पहुंचे बुजुर्ग की मौत,बंगाल में जमकर बवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव-2024 के सातवें और अंतिम फेज में शनिवार को 7 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश की 57 सीटों पर वोटिंग संपन्न हो गई है। चुनाव आयोग के वोटर टर्नआउट एप के मुताबिक शाम तक 60 फीसदी से ज्यादा वोटिंग हो चुकी है। सबसे ज्यादा वोटिंग हिमाचल प्रदेश में और सबसे कम वोटिंग बिहार में हुई है। इसके अलावा ओडिशा में विधानसभा चुनाव के लिए कम वोटिंग हुई। 4 राज्यों की 9 विधानसभा सीटों पर भी उपचुनाव की वोटिंग संपन्न हो गई है। बलिया में वोट देने पहुंचे एक बुजुर्ग की पोलिंग बूथ पर मौत हो गई। डॉक्टरों का कहना है कि बुजुर्ग की मौत गर्मी की वजह से हुई। सातवें चरण में भी पश्चिम बंगाल से हिंसा की खबरें आई हैं। पश्चिम बंगाल के भांगर में सीपीएम (एम) और आईएफएस के कार्यकर्ताओं ने टीएमसी समर्थकों पर बम से हमले का आरोप लगाया है। वहीं राज्य के मुख्य निर्वाचन कार्यालय ने ट्वीट करके बताया कि जयनगर के बेनीमाधवपुर स्कूल के पास सेक्टर ऑफीसर से भीड़ ने रिजर्व ईवीएम और कागजात लूट लिए। मशीनों को तालाब में फेंक दिया गया।

लोकसभा चुनाव के आखिरी चरण में यूपी की 13 सीटों पर वोटिंग संपन्न हो गई है। सबसे ज्यादा चंदौली में और सबसे कम सलेमपुर में वोटिंग हुई। गाजीपुर से सांसद अफजाल ने चुनाव आयोग से मतदाताओं को बूथ से भगाने का आरोप लगाया है। अफजाल ने कहा- बूथ संख्या 201 कमपोजिट स्कूल मूर्तजीपुर पर दबंगों ने मतदाताओं को डरा धमकाकर भगा दिया गया है। एकतरफा वोट डाले जा रहे हैं। सपा ने चुनाव आयोग से 7 घंटे में 80 से ज्यादा शिकायतें की हैं।

ज्यादातर शिकायतें ईवीएम से जुड़ी हुई हैं। गाजीपुर में गर्मी से दरोगा समेत 3 पुलिसकर्मी बेहोश हो गए। तीनों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। वहीं, बलिया में वोट देने पहुंचे एक बुजुर्ग की पोलिंग बूथ पर मौत हो गई। वह मतदान करने के लिए लाइन में लगा था, तभी वह बेहोश होकर गिर पड़ा। थोड़ी देर में उसने दम तोड़ दिया। डॉक्टरों का कहना है कि बुजुर्ग की मौत गर्मी की वजह से हुई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल के गौरव दिवस पर दीं शुभकामनाएँ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राजधानी भोपाल के गौरव दिवस के अवसर पर नागरिकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्ष 1949 में 1 जून को भोपाल

रियासत का विलीनीकरण हुआ था। विलीनीकरण आंदोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों , बलिदानियों के कारण ही भोपाल को उज्ज्वल भविष्य प्राप्त हो सका। इन सभी का योगदान अविस्मरणीय है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल ने विकास के अनेक आयाम देखे हैं। मध्यप्रदेश की राजधानी के विकास में सभी वर्गों ने सहयोग दिया है। स्वच्छता और हरियाली भोपाल की पहचान बनी है। भोपाल को भारत की श्रेष्ठ राजधानियों में शामिल करना राज्य सरकार का उद्देश्य भी है। इस दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कदम भी उठाए गए हैं। हम सभी संकल्पित होकर भोपाल की स्वच्छता, सौंदर्यीकरण एवं प्रगति के प्रयासों में पूर्ण सहभागी होंगे।

गर्मी का 'आतंक', 4 दिन में 320 की मौत

● इनमें 25 चुनाव ड्यूटी में लगे कर्मचारी-अधिकारी

दिल्ली समेत 14 राज्यों में हीटवेव का अलर्ट जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में गर्मी और हीटस्ट्रोक से पिछले चार दिन में 320 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। पिछले तीन दिनों में उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा करीब 100 लोगों की जान गई है। बिहार में पिछले 3 दिनों में हीटवेव से 69 लोगों की मौत हुई। यूपी-बिहार में शुक्रवार को करीब 40 लोगों की मौत की खबर है। इनमें 25 लोकसभा चुनाव की ड्यूटी में लगाए गए कर्मचारी और अधिकारी हैं। पिछले 4 दिन में राजस्थान में गर्मी के चलते 60, झारखंड में 37, ओडिशा में 18, मध्य प्रदेश में 2 और दिल्ली में एक व्यक्ति की मौत हुई। झारखंड के अस्पतालों में 1,326 लोग भर्ती हैं। कई स्थानों पर हीटस्ट्रोक से जुड़े वार्ड में जगह नहीं बची है। शुक्रवार को यूपी के मिर्जापुर में एक जून को मतदान के लिए पोलिंग पार्टियों को रवाना किया जा रहा था। इस दौरान दोपहर में अचानक होमगार्ड, सिपाही, पीएसी के जवान और पैरामिलिट्री के जवान बेहोश होने लगे। कुछ पोलिंग पार्टी के साथ मतदान केंद्र पर पहुंचकर बेहोश हो गए। आईएमडी के मुताबिक, शुक्रवार को कानपुर में देश का सबसे ज्यादा तापमान 48.2 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं, हरियाणा का सिरसा दूसरे नंबर पर रहा, यहां पारा 47.8 डिग्री रहा। दिल्ली के आयानगर का पारा 47 डिग्री दर्ज किया गया। शनिवार को राजस्थान, यूपी, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, आंध्र प्रदेश और हिमाचल में हीटवेव का अनुमान है।

शाह ने राजकोट अग्निकांड को लेकर की बैठक

कोर्ट ने चार आरोपियों को 12 दिन की रिमांड पर भेजा

राजकोट (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शुक्रवार को छोटे से प्रवास पर राजकोट पहुंचे। यहां उन्होंने 'राजकोट गेम जोन' अग्निकांड हादसे को लेकर नगरीय निकाय और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बैठक की। अधिकारियों के साथ उनकी यह बैठक उनके सोमनाथ रवाना होने से पहले दोपहर को राजकोट के हवाई अड्डे पर हुई, इसके बाद वे वेरावल जिले के प्रभास पाटन में स्थित सोमनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना करने के लिए निकल गए। इसी मामले में गुरुवार को गिरफ्तार 4 अधिकारियों को अदालत ने 12 दिन की रिमांड पर भेज दिया।

पुणे पोर्श केस में अब नाबालिग आरोपी की मां गिरफ्तार

● बेटे से ब्लड सैंपल बदलने का आरोप, पुलिस ने नाबालिग से पूछताछ की

पुणे (एजेंसी)। पुणे पोर्श कार केस में नाबालिग आरोपी की मां शिवानी अग्रवाल को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुणे पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार ने शनिवार (1 जून) को बताया कि महिला को देर रात अरेस्ट किया गया है। शिवानी पिछले कुछ दिनों से घर

से गायब थीं। उन पर बेटे का ब्लड सैंपल बदलवाने के लिए अपना ब्लड सैंपल देने और डॉक्टरों को पैसे देने का आरोप है। पुलिस ने कोर्ट में बताया था कि नाबालिग आरोपी का ब्लड सैंपल किसी महिला के सैंपल से बदला गया था, ताकि ये दिखाया जा सके कि घटना के वक्त वह नशे में नहीं था। यह महिला और कोई नहीं, आरोपी की मां ही थी। पुणे के कल्याणी नगर इलाके में 18-19 मई की रात 17 साल 8 महीने के एक लड़के ने ए सेक्टर में काम करने वाले बाइक सवार युवक-युवती को टक्कर मारी थी, जिससे दोनों की मौत हो गई।

एग्जिट पोल में 'एनडीए' बम-बम, हर ओर लहर

सच होगा मोदी का नारा

5 एग्जिट पोल में एनडीए 350 पार, इंडिया को 125 से 150 सीटें

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए मतदान संपन्न हो चुका है। अब एग्जिट पोल के परिणाम सामने आ गए हैं। एग्जिट पोल के नतीजों पर गौर करें तो बीजेपी ने 2019 की तुलना में अपने वोट शेयर और सीटों की संख्या में इजाफा करती दिख रही है। इतना ही नहीं, अगर एग्जिट पोल के परिणाम फाइनल नतीजे में बदलते हैं तो एनडीए इस चुनाव में पीएम मोदी के द्वारा दिए गए नारे अबकी बार 400 पार के लक्ष्य को हासिल करता दिख रहा है। लोकसभा चुनाव के सातों फेज की वोटिंग खत्म, नतीजे 4 जून को आएंगे लेकिन उससे पहले तमाम न्यूज चैनलों और एजेंसियों के एग्जिट पोल आ गए हैं। 5 एग्जिट पोल में एनडीए को 350 से ज्यादा तो इंडिया को 125 से 150 सीटें मिलने का अनुमान है। अगर गठबंधन की बात करें तो एनडीए दो तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाता दिख रहा है। एनडीए के खाते में 367-403 सीटें जाती दिख रही हैं। वहीं,

इंडिया गठबंधन को 129-161 सीटों से संतोष करना पड़ सकता है। अन्य के खाते में महज 7-18 सीटें जा रही हैं। एग्जिट पोल के पूर्वानुमान के मुताबिक, बीजेपी को अकेले 318-342 सीटें जाती दिख रही हैं। कांग्रेस को 53-66 सीटों पर ही संतोष करना पड़ सकता है। वहीं, पश्चिम बंगाल में अपने दम पर चुनाव लड़ रही टीएमसी को 19-23 सीटें मिल रही हैं। डीएमके का भी कुछ ऐसा ही हाल है। उसे 18-22 सीटें मिलने की संभावना है। टीडीपी के हिस्से 13-16 सीटें जाती दिख रही हैं। एग्जिट पोल के पूर्वानुमान के मुताबिक, देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में एनडीए के खाते में 58-66 सीटें जा रही हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 42.9 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 02 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

सलमान की कार पर हमले का प्लान 4 लोग अरेस्ट

- पाकिस्तान से एके-47 मंगवा रहे थे

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड ऐक्टर सलमान खान पर एक बार फिर से हमला करने की कोशिश को मुंबई पुलिस ने नाकाम कर दिया है। नवी मुंबई पुलिस ने लॉरेंस बिश्नोई के गिरोह के चार लोगों को गिरफ्तार किया है जो पनवेल में सलमान की कार पर अटैक करने की प्लानिंग कर रहे थे। आरोपियों की पहचान धनंजय उर्फ अजय कश्यप, गौरव भाटिया उर्फ न्हाई, वासपी खान उर्फ वसीम चिकना और जीशान खान उर्फ जावेद खान के तौर पर हुई है। चारों के खिलाफ आईपीसी की धारा 115, 120

(ए), 506 के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने लॉरेंस बिश्नोई, अनमोल बिश्नोई, गोल्डी बराड़ समेत कुल 18 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। पुलिस के मुताबिक चारों आरोपी अटैक करने के लिए पाकिस्तान से सप्लायर के जरिए हथियार मंगवाने की योजना बना रहे थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हमलावर एके-47,एफ-16 और एम-92 मंगवाने की कोशिश कर रहे थे। इन्होंने फार्म हाउस और कई शूटिंग स्पॉट्स की रेकी की थी। पुलिस को इनके मोबाइल से ऐसे कई विडियोज भी बरामद हुए हैं। इन चारों ने सलमान के घर की रेकी की थी।

'लू' से मौत पर योगी सरकार देगी चार लाख का मुआवजा

- लेखपाल समेत अन्य अधिकारियों को देनी होगी मौत की सूचना

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपी समेत देश के कई हिस्सों में भयानक गर्मी पड़ रही है। इसके साथ ही गर्म हवा भी चल रही है। जिसके वजह से बहुत से लोगों की मौत होने की भी खबर आई है। इसको लेकर यूपी सरकार ने घोषणा की है कि किसी व्यक्ति की लू से मौत होती है तो राज्य सरकार उसके परिवार को 4 लाख की सहायता राशि दी जाएगी। हालांकि मृत व्यक्ति का पोस्टमार्टम कराना जरूरी है। यूपी सरकार ने प्रदेश के लोगों के लिए बड़ी घोषणा

की है। सरकार ने कहा है कि अगर की व्यक्ति की मौत लू से होती है तो इसको लेकर मृतक के परिजनों को इलाके के एसडीएम, तहसीलदार, लेखपाल को मृत व्यक्ति की सूजना देनी होगी। इसके साथ ही मृत व्यक्ति के शव का पोस्टमार्टम भी कराना होगा। राजस्व विभाग पोस्टमार्टम कराने के बाद इसकी रिपोर्ट जिले के डीएम को भेजेगा। राजस्व विभाग द्वारा भेजी गई रिपोर्ट के आधार पर जिला प्रशासन संबंधित राशि जारी करेगा।

आरोपों-विवादों के बीच पीएम मोदी की ध्यान साधना पूरी

- विवेकानंद रॉक मेमोरियल में 3 दिन रहे; सूर्य को अर्घ्य दिया, ध्यान मंडपम की परिक्रमा की

कन्याकुमारी (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने कन्याकुमारी के विवेकानंद रॉक मेमोरियल में 45 घंटे की ध्यान साधना की। वे 30 मई की शाम को कन्याकुमारी पहुंचे थे। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा के सामने ध्यान लगाया। उन्होंने विवेकानंद शिला के पास स्थित तमिल कवि तिरुवल्लुवर की 133 फीट ऊंची प्रतिमा के दर्शन किए। उन्हें नमन किया। इसके बाद वे दोपहर 3 बजे विवेकानंद रॉक मेमोरियल से बाहर निकले। शनिवार (1 जून) को ध्यान का तीसरा दिन था। आज सूर्योदय के समय मोदी ने सूर्य को अर्घ्य दिया। ध्यान मंडपम की परिक्रमा की। आज की तस्वीरों में मोदी

रुद्राक्ष की माला जपते, ध्यान मंडपम के कॉरीडोर में बैठे और स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा को नमन करते दिखाई दिए।

हरियाणा कांग्रेस में चुनाव नतीजों से पहले हलचल

- प्रदेश प्रभारी ने अपने सभी 9 कैंडीडेट को किया तलब

चंडीगढ़ (एजेंसी)। बीजेपी में जहां पिछले चार दिनों से लोकसभा चुनाव पर मंथन चल रहा है, वहीं प्रदेश की छह सीटों पर भितरघात की शिकायतों के चलते कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया ने भी दिल्ली में बैठक बुलाई है। इस बैठक में पार्टी के सभी नौ प्रत्याशियों को बुलाया गया है। वे चुनाव के संबंध में अपनी-अपनी रिपोर्ट देंगे। इस बैठक में पार्टी के अध्यक्ष उदयभान और नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा भी मौजूद रहेंगे। प्रदेश की नौ लोकसभा सीटों पर कांग्रेस ने पूरी मजबूती के साथ चुनाव लड़ा है। सिरसा में कुमारी सैलजा को छोड़कर बाकी आठ लोकसभा सीटों पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा की पसंद के उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा। हालांकि, शुरू में कुछ उम्मीदवारों को हल्का बताया गया, लेकिन चुनाव आते ही कांग्रेस प्रत्याशी मजबूत हो गए। नतीजों को कांग्रेस अपने पक्ष में मानकर चल रही है।

भारत को डर-गलत हाथों में जा रहे देश के हथियार

- दावा-वेपन्स के एक्सपोर्ट पर निगरानी के आदेश, रिपोर्ट में कहा था भारतीय हथियार यूक्रेन पहुंचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्रालय भारत से बनकर एक्सपोर्ट होने वाले हथियारों की निगरानी बढ़ा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक डिफेंस मिनिस्ट्री ने हथियार बनाने वाली प्राइवेट कंपनियों से चेतावनी जारी कर कहा है कि वो इस बात पर कड़ी निगरानी रखें की उनके हथियार कहां पहुंच रहे हैं। दरअसल, ऐसा करने की नौबत उन मीडिया रिपोर्ट्स के बाद आई है, जिनमें दावा किया गया था कि भारत के हथियार गलत हाथों तक पहुंच रहे हैं। यूरेशियन टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक साल की शुरुआत में कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि भारत में बने 155 एमएम आर्टिलेरी शेल्स का इस्तेमाल यूक्रेन में हो रहा है। जबकि विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया था कि भारत की तरफ से किसी भी तरह के हथियार यूक्रेन में नहीं भेजे गए हैं।

'विश्व रंग-2024' के मॉरीशस में आयोजन की हुई घोषणा

भोपाल। 'विश्व रंग-2024' भाषा, संस्कृति, साहित्य और कला महोत्सव के रूप में होगा आयोजित। संतोष चौबे, निदेशक, विश्व रंग विश्व रंग-2024 अन्तरराष्ट्रीय आयोजन समिति की ऑनलाइन बैठक हुई आयोजित विश्व के कई देशों के प्रतिनिधियों ने वर्चुअल प्लेटफार्म पर की रचनात्मक भागीदारी भाषा,संस्कृति, साहित्य और कला के लिए वैश्विक स्तर पर अद्भुत ख्याति अर्जित करने वाले 'विश्व रंग' महोत्सव के छटवें संस्करण का आयोजन 7 से 9 अगस्त 2024 तक विश्व हिंदी सचिवालय (मॉरीशस) और रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भारत) के संयुक्त तत्वावधान में मॉरीशस में आयोजित होगा।

विश्व रंग अंतरराष्ट्रीय आयोजन समिति की ऑनलाइन बैठक में 'विश्व रंग-2024' की घोषणा करते हुए श्री संतोष चौबे, निदेशक, विश्व रंग एवं कुलाधिपति, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने बताया कि टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र (भारत), टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र (भारत), महात्मा गांधी, संस्थान (मॉरीशस), रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान (मॉरीशस), हिंदी स्पीकिंग यूनियन (मॉरीशस), हिंदी प्रचारिणी सभा, (मॉरीशस), महर्षि दयानंद सरस्वती संस्थान (मॉरीशस), विश्व रंग सचिवालय (भारत) और वनमाली सृजन पीठ (भारत) के सहयोग से विश्व रंग-2024 का आयोजन होगा।

श्री संतोष चौबे ने अंतरराष्ट्रीय आयोजन समिति को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी भाषा ने वैश्विक स्तर पर अपना परचम लहराया है। हिंदी सहित इसकी सहोदर भारतीय भाषाओं और बोलियों के संरक्षण-संवर्धन और प्रचार-प्रसार की दिशा में विश्व रंग महोत्सव ने वैश्विक स्तर पर एक अद्भुत पहचान कायम की है। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय परिसर में 'टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र' की स्थापना की गई है। इसके अंतर्गत हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम का निर्माण कर विभिन्न देशों को इससे जोड़ा जा रहा है। इस बार विश्व रंग भाषा शिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर वैश्विक विमर्श के नये द्वार खोलेगा। भाषा शिक्षण के साथ ही विश्व रंग में साहित्य, कला, संस्कृति विशेष आकर्षण के केन्द्र होंगे। भाषा और साहित्य के सत्रों तथा सांस्कृतिक सत्रों में भारत सहित विभिन्न देशों तथा मॉरीशस के भाषाविदों, रचनाकारों और कलाकारों द्वारा रचनात्मक भागीदारी की जाएगी। भाषा शिक्षण के प्रचार-प्रसार और वैश्विक विस्तार के लिए अनुकरणीय कार्य करनेवाले विभिन्न देशों के विशेषज्ञों को विश्व रंग-2024 सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

आपने आगे बताया कि 'विश्व रंग-2024' के पूर्व रंग में विभिन्न श्रेणियों में रचनात्मक गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन मॉरीशस के विभिन्न विद्यालयों में आयोजित किया जाएगा। इनमें विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र विश्व रंग द्वारा प्रदान किए जाएँगे।

डॉ. जवाहर कर्नावट, निदेशक, टैगोर हिंदी अंतरराष्ट्रीय केन्द्र ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि विश्व रंग में विभिन्न देशों के प्रवासी भारतीय रचनाकारों की ग्यारह पुस्तकों का लोकार्पण किया जाएगा। इस अवसर पर 'विश्व में हिंदी' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया जाएगा। इसमें विश्व के 65 से अधिक देशों में हिंदी की स्थिति का आकलन किया गया है।

टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति के निदेशक श्री विनय उपाध्याय ने अंतरराष्ट्रीय बैठक का संचालन करते हुए विश्व रंग के पूर्व रंग, मंगलाचरण, लोक कला संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्व रंग 2024 भाषा, संस्कृति, साहित्य और कला के लिए वैश्विक फलक तैयार करने में सार्थक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर विश्व रंग 2024 के पोस्टर का लोकार्पण विश्व रंग के स्वप्नदृष्टा श्री संतोष चौबे, डॉ. जवाहर कर्नावट, निदेशक, टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र व सलाहकार, प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केन्द्र, श्री विनय उपाध्याय, निदेशक, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र एवं श्री संजय सिंह राठौर, सचिव, विश्व रंग सचिवालय, श्री विकास अवस्थी, आईसेक्ट द्वारा किया गया। विभिन्न देशों के कंट्री कॉआर्डिनेटर ने इस अवसर पर रचनात्मक भागीदारी की।

सीएम केजरीवाल को कोर्ट से नहीं मिली राहत

तिहाड़ से देखने पड़ेंगे लोकसभा चुनाव के नतीजे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की एक कोर्ट ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जमानत याचिका पर सुनवाई 7 जून तक के लिए स्थगित कर दी। इसका मतलब है कि केजरीवाल को कल यानी 2 जून को जेल लौटना होगा, जो अंतरिम जमानत की समय सीमा थी, जिसके तहत वह

आम आदमी पार्टी (आप) और विपक्षी दल इंडिया गठबंधन के लिए प्रचार कर सकते थे। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली शराब नीति मामले से जुड़े कथित धन शोधन को लेकर केजरीवाल द्वारा दायर जमानत याचिका का विरोध किया। ईडी ने विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा को बताया कि केजरीवाल ने तथ्यों को दबा दिया है तथा अपने स्वास्थ्य सहित अन्य मुद्दों पर गलत बयान दिए हैं। ईडी के वकील सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि केजरीवाल ने शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में भ्रामक दावा किया कि वह 2 जून को सरेंडर करने जा रहे हैं।

वाटर हार्वेस्टिंग में बढ़ी जनता की रुचि

सभी अशासकीय स्कूलों की छत पर रूफ वाटर हार्वेस्टिंग लगेगा, अभिभाषकों ने भी जताई

देवास/मोहन वर्मा । कलेक्टोरेट में जल संचय अभियान के तहत अशासकीय स्कूलों के संचालकगणों की बैठक हुई।बैठक को संबोधित करते हुए जिला कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने सभी अशासकीय स्कूलों की छत पर रूफ वाटर हार्वेस्टिंग तकनीक अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि पानी बचाने का काम इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

कलेक्टोरेट में जल संचय अभियान के तहत शहर के 120 स्कूलों की छत से बहने वाले पानी को थामने के लिए सभी स्कूलों में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग तकनीक का इस्तेमाल करने पर अशासकीय स्कूल संगठन के अध्यक्ष राजेश खत्री ने आगे बढ़कर इस आशय की घोषणा की। आनंद विभाग की डॉ समीरा नईम ने शुरुआत करते हुए कहा कि हम अगली पीढ़ी के लिए संपत्ति के साथ-साथ पानी बचाने की भी

पहल करें ताकि आने वाली पीढ़ी को जल संकट का सामना न करना पड़े।जल वैज्ञानिक सुनील चतुर्वेदी जी ने जल संचय की पूरी तकनीक को बड़े सहज ढंग से सामने रखा। बैठक में अमृत संचय टीम के गंगा सिंह सोलंकी,श्रीकांत उपाध्याय, अरविंद त्रिवेदी तथा कृपाली राणा सहित कई प्रतिष्ठितजन भी उपस्थित थे।इसी तरह जिला अभिभाषक संघ के बीच अमृत संचय अभियान को लेकर पहुंचे जिलाधीश श्री ऋषव गुप्ता ने कहा कि सभी रूफ रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाये और पानी का संचय करें । म.प्र. शासन एवं जिला प्रशासन देवास के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश मधुसूदन मिश्र विशेष अतिथि रूप में उपस्थित रहे। सर्वप्रथम कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का स्वागत संघ अध्यक्ष अशोक वर्मा, उपाध्यक्ष पंकज पड्या, उपाध्यक्ष (महिला) गीता शर्मा, सचिव अतुल कुमार पंड्या, सहसचिव जितेन्द्र सिंह ठाकुर, कोषाध्यक्ष दीपेन्द्र सिंह तोमर, पुस्तकालय सचिव श्वेतांक राज शुक्ला सहित अधिवक्ताओं ने किया।

'पशु बलि' को लेकर केरल कर्नाटक सरकार में ठनी

केरल सरकार का दावा-झूठ बोल रहे हैं डीके शिवकुमार

बेंगलुरु (एजेंसी)। केरल सरकार ने शनिवार को कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के उस दावे को खारिज कर दिया जिसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि उत्तरी केरल में एक मंदिर के पास उनके (शिवकुमार), मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और कांग्रेस सरकार को लक्ष्य करके पशु बलि दी गई थी। केरल के देवस्वोम मंत्री के राधाकृष्णन ने कहा कि शिवकुमार ने मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और कांग्रेस सरकार और खुद उनके (शिवकुमार) को लक्ष्य करके राज्य के कन्नूर जिले के तालीपरम्बा में राजराजेश्वर मंदिर के पास पशु की बलि दिए जाने का बड़ा आरोप लगाया है। मंत्री ने कहा, हमने दावे की जांच की और मालाबार देवस्वोम बोर्ड से भी संपर्क किया। हमें जो प्रारंभिक रिपोर्ट मिली है उसके अनुसार मंदिर में या उसके आसपास ऐसा कुछ नहीं हुआ है। देवस्वोम बोर्ड ने भी इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि इस बात की जांच होनी चाहिए कि शिवकुमार ने ऐसा आरोप क्यों लगाया। राधाकृष्णन ने यह भी कहा कि सरकार इस बात की जांच कर रही है कि क्या कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री द्वारा लगाए गए आरोपों जैसा कुछ केरल में कहीं और हुआ है, लेकिन शुरुआती जांच के अनुसार राज्य में ऐसी कोई घटना नहीं हुई है।

जमीन खाली कर दो, वरना जबरन कराएंगे

- भारतीय क्रिकेटर पूनम यादव को मिली बड़ी धमकी
- क्रिकेटर बोलीं-मैंने जिंदगी भर की कमाई लगा दी है

आगरा (एजेंसी)। आगरा में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की खिलाड़ी और अर्जुन अवार्डी पूनम यादव को धमकी मिली है। उन्होंने कमिश्नर से लिखित शिकायत की। कहा- उनकी जमीन पर भू-माफिया कब्जा करना चाहते हैं। धमकी दे रहे हैं कि जमीन खाली कर दो, वरना जबरन कराई जाएगी। पूनम आगरा के सैनिकपुरम में रहती हैं। उन्होंने बताया कि कुंडौल में 703 वर्ग मीटर जमीन कपिल कुमार से खरीदी थी। अब भू-माफिया इस जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं। खुद को लेखपाल बताते हुए भूपेंद्र सिंह नाम के एक युवक ने फोन करके उनको धमकी दी। कमिश्नर ने 10 दिन में जांच कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिए हैं। क्रिकेटर पूनम यादव ने बताया कि अपनी जिंदगी भर की कमाई को उन्होंने इस जमीन को खरीदने में लगा दिया। 2 साल पहले करीब सवा करोड़ रुपए में जमीन खरीदी थी। अब अचानक से उस जमीन के

दाम बढ़ गए तो कुछ लोग इस पर कब्जा करना चाहते हैं।

कमिश्नर रितु माहेश्वरी से शिकायत की थी, लेकिन उनकी ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसके चलते ही क्षेत्रीय लेखपाल समेत भू-माफिया के हौसले बुलंद हो गए। 2 दिन पहले अचानक नायाब तहसीलदार व लेखपाल का फोन आया कि जमीन की पैमाइश कराने के लिए आ जाइए। वो कानपुर में थीं। 31 मई को उनके घर पर 29 मई की तारीख का नोटिस पहुंचा। इसमें 30 मई को जमीन पर पैमाइश के लिए उपलब्ध रहने को कहा गया था। उनका आरोप है कि उनकी जमीन पर कब्जा कराने में तहसील के लोग भू-माफिया का साथ दे रहे हैं। उनकी कहीं सुनवाई नहीं हो रही है। वो काफी डरी हुई हैं। पूनम यादव ने कमिश्नर रितु माहेश्वरी को लिखित शिकायत दी है कि कुंडौल में उन्होंने 703 वर्ग मीटर जमीन कपिल कुमार से खरीदी थी।

फ्लाइट में बम होने का शक मुंबई में इमरजेंसी लैंडिंग

- एक हफ्ते में इंडिगो एयरलाइन में बम से जुड़ा ये दूसरा मामला

मुंबई (एजेंसी)। चेन्नई से मुंबई जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट में शनिवार को बम होने का शक हुआ। इसके बाद मुंबई एयरपोर्ट पर इमरजेंसी डिक्लेयर करके लैंडिंग कराई गई। इसमें 172 पैसेंजर्स थे। फिलहाल, फ्लाइट में तलाशी ली जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, फ्लाइट नंबर 6ए-5314 आज सुबह करीब 6.50 बजे चेन्नई से रवाना हुई थी। मुंबई जाने के दौरान इसमें एक लावारिस रिमोट मिला। इसके बाद पायलट ने मुंबई एयर ट्रैफिक कंट्रोल को सूचना दी और इमरजेंसी लैंडिंग की इजाजत मांगी। मुंबई एयरपोर्ट पर सुबह 8.45 बजे फ्लाइट की लैंडिंग हुई।

परिक्रमा

कटाक्ष और शाब्दिक हमलों के लिए आत्मचिंतन करेंगे राजनेता?

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

देश की नई सरकार चुनने के लिए 2024 के लोकसभा चुनाव में राजनेताओं ने एक-दूसरे पर कटाक्ष करने के लिए जिस शाब्दिक गोला-बारुद का उपयोग किया उसके लिए यह चुनाव प्रचार लम्बे समय तक याद किया जायेगा, चाहे नतीजे कुछ भी निकलें। ऐसा लगता है मानों एक-दूसरे के प्रति शाब्दिक मर्यादा की जो सीमा-रेखा थी उसे तार-तार करने में कोई किसी से पीछे नहीं रहा। मतदाताओं ने अपना फैसला इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों में कैद कर दिया है लेकिन मशिनों के गर्भ से क्या नतीजा निकलता है इसके लिए 4 जून तक इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन इंतजार आज के जमाने में कौन करता है । इसलिए एक्जिट पोल के नतीजों पर ही 3 जून तक बहस छिड़ी रहने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।अपनी-अपनी जीत के सभी हिमालयीन वायदे कर रहे हैं लेकिन हिमालय की चोटी पर जाकर कौन जीत का परचम लहरायेगा यह 4 जून 2024 को दोपहर बाद तक बहुत कुछ स्पष्ट हो जायेगा। वैसे जो पूर्वानुमान चुनावी विश्लेषक और सर्वे करने वाली एजेंसियां लगा रही हैं उनसे एक केंद्रीय स्वर यही उभर कर सामने आ रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सत्ताशीर्ष पर पदासीन होने की हैट्रिक बनाने जा रहे हैं। इस सबके बावजूद इंडिया गठबंधन के नेताओं और इक्का-दुक्का विश्लेषण करने वालों का यह मानना है कि इंडिया गठबंधन सरकार बनाने जा रहा है।

2024 के लोकसभा चुनाव में विश्व गुरु, अनुभवी चोर, दो शहजादे से लेकर मंगलसूत्र, मुर्गा-मटन, मछली सहित आरोप-प्रत्यारोपों के जो शाब्दिक तीर छोड़े गये उसने सुर्खियां तो बटोरीं लेकिन यह बात भी शिद्दत के साथ महसूस कराई कि चुनाव नतीजे आने तक जो समय मिल रहा है उसमें राजनेता इस बात का आत्मचिंतन जरुर करें कि किसने क्या कहा और क्या उससे शाब्दिक मर्यादा तार-तार नहीं हुई। मीडिया के विभिन्न मंचों से जो चर्चा हुई और पक्ष-विपक्ष दोनों ने जो शब्द गढ़े इस वजह से भी लोकसभा चुनाव की जो सरगर्मी पहले चरण से आरंभ हुई वह आखिरी चरण तक न केवल बढ़ी बल्कि और दिलचस्प होती गयी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो शहजादे, अनुभवी चोर, मंगलसूत्र, मछली और मुजरा शब्दों के सहारे जिसे वह और उनके सहयोगी साथी इंडी गठबंधन कहते रहे, उसकी जमकर घेराबंदी की। उत्तरप्रदेश की एक चुनावी रैली में मोदी का कहना था कि तुष्टिकरण की राजनीति के लिए दो शहजादे सामने आये हैं, हालांकि उन्होंने इन शहजादों के नाम नहीं लिए लेकिन उनके निशाने पर साफ-साफ कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ही थे। एक टीवी चैनल के साक्षात्कार के दौरान दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर कटाक्ष करते हुए मोदी ने कहा कि अनुभवी चोर जानता है कि कैसे सफाई की जाती है। दिल्ली में शराब नीति घोटाले में नकदी लेन-देन संबंधी सबूतों के अभाव के बारे में पूछे जाने पर मोदी ने इसी प्रकार केजरीवाल की घेराबंदी की। उन्होंने इंडिया गठबंधन

पर मुस्लिम वोट बैंक के लिए मुजरा करने का आरोप भी लगाया। राजद नेता तथा बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के सावन में मछली खाने और राहुल गांधी तथा लालू यादव के मटन खाने वाला वीडियो सामने आने के बाद तल्ख लहजे में मोदी का कहना था कि विपक्षी दल अपनी मुगलिया मानसिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं और अपने वोट बैंक को मजबूत करने के लिए वीडियो साझा कर बहुसंख्यक समुदाय को चिढ़ा रहे हैं।

कांग्रेस के स्टार प्रचारक और पूरे देश में इंडिया गठबंधन का अलख जगाने वाले राहुल गांधी के निशाने पर मुख्यतया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रहे और राहुल गांधी ने टेम्पो वाले अरबपतियों का कठपुतली राजा जैसे शब्दों से अपने शाब्दिक तीर चुनावी समर में चलाये। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अदाणी और अम्बानी टेम्पो से कांग्रेस को बोरे भर-भर कर नकदी पहुंचाने जैसी टिप्पणी पर कटाक्ष करते हुए मोदी को टेम्पो वाले अरबपतियों का एक कठपुतली राजा निरुपित किया। राहुल गांधी ने मोदी के बायोलॉजिकल वाले बयान का मजाक उड़ाते हुए यहां तक कह दिया कि अगर एक साधारण व्यक्ति ने यह बयान दिया होता तो मनोचिकित्सक के पास ले जाना पड़ता। नरेंद्र मोदी ने गुजरात की चुनावी सभा में विरासत-कर के मुद्दे को लेकर कांग्रेस पर हमलावर होते हुए कहा कि अगर किसी के पास दो भैंस हैं तो विपक्षी पार्टी लोकसभा चुनाव जीतने पर उससे एक भैंस छीन लेगी, इस पर पलटवार करते हुए राष्ट्रीय जनता दल सुप्रीमो लालू यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री को ऊंट दिया जायेगा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भी कहां पीछे रहे, उन्होंने हरियाणा की चुनावी सभा में भाजपा से हर साल दो करोड़ नौकरियां और हर किसी के बैंक खाते में 15 लाख रुपये तथा किसानों की आय दुगुनी करने जैसे वायदों पर जवाब देने को कहा और साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को झूठों का सरदार तक कह डाला। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने झारखंड की एक चुनावी रैली में आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी आदिवासियों से नफरत करते हैं क्योंकि उन्होंने देश के सबसे बड़े आदिवासी नेता और पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को जेल भेज दिया है।

भले ही वामपंथी दल इंडिया गठबंधन में शामिल हों लेकिन केरल में यूडीएफ यानी कांग्रेस की अगुवाई वाला मोर्चा और एलडीएफ यानी वामपंथियों की अगुवाई वाले मोर्चे के बीच आपस में तलवारे खिंची हुई हैं क्योंकि वहां के राजनीतिक हालातों को देखते हुए सभी सीटों पर कांग्रेस और वामपंथी दोनों दल आमने-सामने चुनाव लड़ रहे हैं। राहुल गांधी की एक टिप्पणी से विक्षुब्ध केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने उन्हें पूरी तरह अपरिपक्व बताया। राहुल गांधी ने टिप्पणी की थी कि केंद्र की भाजपा सरकार ने विपक्ष शासित राज्यों के दो मुख्यमंत्रियों हेमंत सोरेन और अरविन्द केजरीवाल को जेल भेजा लेकिन विजयन को नहीं भेजा। प . बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कलकत्ता हाईकोर्ट द्वारा राज्य में 26 हजार शिक्षकों की भर्ती रद्द किए जाने के बाद भाजपा को नौकरी खाने वाली पार्टी निरुपित किया। ममता बनर्जी ने भाजपा पर उनकी सरकार के फैसलों में अडंगा लगाने और साजिश रचने का आरोप भी लगाया।

और यह भी

सातवें चरण के लिए मतदान होने के एक दिन पूर्व मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कांग्रेस के साथ गांधी परिवार पर तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस का मनोबल गिरा हुआ है इसका अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि तीन बार सांसद रहे राहुल गांधी ने एक बार पटकनी खाने के बाद अपनी अमेठी सीट छोड़ दी और केरल भाग गये। अगर सामने समुद्र नहीं आता तो वे अरब देशों में जाकर चुनाव लड़ते। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सांसद विष्णु दत्त शर्मा का दावा है कि भाजपा 4 जून को जीत का जो इतिहास लिखने जा रही है वह राजनीतिक पंडितों के लिए शोध का विषय होगा। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने चुनावी रैलियों में दिये गये भाषणों को लेकर नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्होंने जिस भाषा का इस्तेमाल किया उससे लगता है कि वह विश्व गुरु नहीं विष गुरु हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री को स्वघोषित भगवान भी निरुपित किया।

डीएवीवी में धारा 52 लगाने की मांग

अभाविप ने उच्च शिक्षा मंत्री को सौंपा ज्ञापन, पेपर लीक सहित बताई अन्य गड़बड़ी

इंदौर (नप्र)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में धारा 52 लगाने की मांग की है। उन्होंने उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार को ज्ञापन सौंपा है। विश्वविद्यालय में लगातार पेपर आउट के मामले सामने आ रहे हैं।अभाविप के नगर महामंत्री सार्थक जैन ने बताया कि देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर में निरंतर पेपर लीक की घटना सामने आ रही है।

पिछले महीने 25 मई के एमबीए प्रथम सेमेस्टर का क्वान्टेटिव टेक्निक्स का पेपर 24 मई को लीक हुआ। दोबारा 28 मई को होने वाला अकाउंटिंग फॉर मैनेजर्स का पेपर भी 27 मई की दोपहर में ही लीक हो गया। 30 मई को होने वाला आईटी एन्ड ई बिजनेस फंडामेंटल का पेपर भी 29 मई को लीक हुआ, जिसके बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने उस पेपर को रातों-रात बदल दिया। पेपर बदले जाने के बाद भी लगभग 60 परसेंट पेपर पहले से ही छात्रों के पास आ गया था।

पहली पत्नी की बेटियों को भी भत्ता देगा पिता

इंदौर में रेलवे अफसर बोला- बेटियां बालिग, खुद कमा सकती ; कोर्ट ने भरण पोषण के दिए आदेश

इंदौर (नप्र)। बगैर बताए दूसरी शादी करने पर रेलवे के एक अफसर को अपनी दो बेटियों को अलग से हर महीने भरण-पोषण देना होगा। फैसला इंदौर की फैमिली कोर्ट ने सुनाया। यानी पहली पत्नी को हर महीने 15 हजार और दोनों बालिग बेटियों को साढ़े 7-7 हजार रुपए अलग।पिता ने दलील दी, बेटियां बालिग हैं। वे खुद कमा सकती हैं। इस पर बेटियों ने भी दिलचस्प बातें रखीं, जिसे सुनने के बाद कोर्ट ने पिता की दलीलों को खारिज कर दिया।

दूसरी शादी, फिर रेलवे के सर्विस रिकॉर्ड से छेड़छाड़

मामला भोपाल के रेलवे में पदस्थ अफसर महेंद्र का है। उनकी पहली शादी सपना से 1992 में हुई। दोनों की दो बेटियां हैं। 2005 तक साथ रहे। फिर महेंद्र ने बिना बताए दूसरी शादी कर ली। पहली पत्नी और बेटियों से अलग रहने लगा। दूसरी पत्नी से एक बेटा और एक बेटी है। ऐसे में महेंद्र ने रेलवे के रिकॉर्ड में छेड़छाड़ की। सर्विस रिकॉर्ड में पहली पत्नी और दोनों बेटियों के फोटो हटाकर दूसरी पत्नी और बेटा-बेटी के लगवा दिए। नाम भी जोड़ दिए।इस मामले में महेंद्र और पत्नी पर धोखाधड़ी का केस दायर हुआ। पहली पत्नी और दो बेटियों ने भरण पोषण के लिए भी महेंद्र पर केस कराया।

खारिज हो गया था बेटियों का भरण-पोषण का दावा

पति के अलग होने पर पहली पत्नी और बेटियों ने भरण-पोषण के लिए मार्च 2022 में फैमिली कोर्ट इंदौर में केस किया। कोर्ट ने 15 हजार रु. प्रतिमाह पहली पत्नी को भरण-पोषण देने का फैसला दिया। बेटियों का दावा खारिज कर दिया। इसका कारण बेटियों का बालिग होना बताया गया। दोनों बेटियों ने पुनः अन्य नियमों के तहत दिसंबर 2022 में भरण-पोषण की अपील की। तर्क दिया कि वे पढ़ाई करती हैं। शादी भी नहीं हुई है। खुद कमाती नहीं है। पिता हमें भी जीवनयापन के लिए खर्च दें।

बचाव में पिता ने कहा- बेटियां बालिग, खर्च खुद उठाए

पिता ने बेटियों के भरण पोषण मांगने पर कोर्ट में कहा - रिटायर्ड हूं। इतनी पेंशन नहीं मिलती है। साथ में बुजुर्ग मां और 55 साल के छोटे भाई की जिम्मेदारी भी है। बेटियों को भरण-पोषण देने में असमर्थ हूं।बेटियों के वकील ने सवाल उठाया - क्या बेटियां आपकी जिम्मेदारी नहीं? पिता कैसे कह सकता है कि बेटियां बालिग हो गई हैं तो अपना भरण-पोषण कर सकती हैं? यदि ऐसा है तो फिर आपका 55 साल का छोटा भाई भी तो है। वह अपना भरण-पोषण खुद कर सकता है। वह तो मानसिक, शारीरिक रूप से सक्षम है। फिर उसी ग्राउंड पर आपका भाई जिम्मेदारी कैसे हो गया और बेटियां नहीं?इसके बाद पिता की दलील खारिज होते चली गई। यह खुलासा भी हुआ कि पिता रिटायर नहीं हुआ है, बल्कि रेलवे भोपाल में पोस्टेड हैं। इस तर्क पर कोर्ट ने दोनों बेटियों को साढ़े सात-सात हजार यानी कुल 15 हजार रुपए महीना देने का फैसला सुनाया। बड़ी बेटी 28 साल और छोटी की उम्र 24 साल है।

सिरपुर ग्रीन वेस्ट कम्पोस्ट प्लांट फिर शुरू होगा

जीटीएस का भी होगा रिनोवेशन ; जगदीशपुरी से हटाया अतिक्रमण, निगम कमिश्नर का दौरा

इंदौर (नप्र)। निगम कमिश्नर शिवम वर्मा ने शनिवार को शहर की सफाई व्यवस्था के साथ ही सिरपुर क्षेत्र में जीटीएस और नाले का निरीक्षण किया। उन्होंने जल स्तोत्र के संरक्षण को लेकर जगदीशपुरी का निरीक्षण किया गया। यहां सिरपुर तालाब के ओवरफ्लो का पानी आता है। इस पर उन्होंने जगदीशपुरी नाले के आसपास के अतिक्रमण को हटाने के निर्देश दिए।निगम कमिश्नर ने सिरपुर स्थित ग्रीन वेस्ट कम्पोस्ट प्लांट का निरीक्षण किया। उन्होंने इसे फिर से चालू करने के निर्देश दिए। साथ ही यहां स्थित जीटीएस का भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने जीटीएस पर रिनोवेशन करने के लिए निर्देश कहा। निरीक्षण में उनके साथ अपर आयुक्त सिद्धार्थ जैन, एक्जीक्युटिव इंजीनियर महेश शर्मा, सुनील गुप्ता आदि अधिकारी उपस्थित थे।

इंदौर-बान्द्रा टर्मिनस स्पेशल ट्रेन का परिचालन स्पेशल किराया के साथ शुरू हुई टिकटों की बुकिंग

इंदौर (नप्र)। समर वैकेशन के दौरान ट्रेनों में यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए इंदौर से बान्द्रा टर्मिनस के मध्य गाड़ी संख्या 09048/09047 इंदौर बान्द्रा टर्मिनस इंदौर स्पेशल दोनों दिशाओं में दो-दो फेरे स्पेशल ट्रेन का परिचालन स्पेशल किराया के साथ किया जाएगा।गाड़ी संख्या 09048 इंदौर बान्द्रा टर्मिनस स्पेशल 02 जून रविवार और 04 जून मंगलवार को इंदौर से 19.15 बजे चलकर रतलाम मंडल के देवास(19.40/19.42), उज्जैन(20.25/20.30), नागदा(21.15/21.17), रतलाम(21.55/22.05) होते हुए अगले दिन यानी सोमवार और शुक्रवार को 08.50 बजे बान्द्रा टर्मिनस स्टेशन पहुँचेगी। इसी प्रकार वापसी में गाड़ी संख्या 09047 बान्द्रा टर्मिनस इंदौर स्पेशल 03 जून सोमवार और 05 जून बुधवार को बान्द्रा टर्मिनस से 11.50 बजे चलकर रतलाम मंडल के दाहोद(22.00/22.02), रतलाम(23.40/23.45), नादगा(00.25/00.27), उज्जैन(01.30/01.35) एवं देवास(02.11/02.13) बजे होते हुए अगले दिन यानी मंगलवार और गुरुवार को 04.40 बजे इंदौर स्टेशन पहुँचेगी।इस ट्रेन का दोनों दिशाओं में देवास, उज्जैन, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा, वडोदरा, भरुच, सूरत, वापी एवं बोरीवली स्टेशनों पर ठहराव दिया गया है। इस ट्रेन में 18 स्लीपर श्रेणी के कोच रहेंगे। इस ट्रेन में टिकटों की बुकिंग आज शाम यानी 4 बजे से शुरू हो गई है हो जाएगी।

कटारिया ग्रुप के ठिकानों पर छापा, 6 करोड़ नकदी के साथ 7 करोड़ के जेवरात मिले

4 बैंक लॉकर्स की हुई छानबीन; रियल एस्टेट और बड़े फाइनेंसरों से भी लेन-देन

इंदौर (नप्र)। इंदौर में फाइनेंस कारोबारी धनसुख राज कटारिया के घर और अन्य ठिकानों पर आयकर विभाग की कार्रवाई में चौंकाने वाली जानकारी मिली है। कटारिया के चार बैंक लॉकर्स में से दो की छानबीन की गई। जिसमें से 6 करोड़ रुपए से अधिक नकदी, 7 करोड़ रुपए का सोना (जेवरात) और 8 करोड़ रुपए की हुंडियां मिली हैं। अभी दो लॉकर्स की छानबीन की जाना है। बड़ी संख्या में पुलिस बल के साथ आयकर विभाग की टीम ने कटारिया समूह के इंदौर और खरगोन के ठिकानों पर छापा मारा है।विभाग द्वारा कटारिया के फाइनेंस के धंधे के मामले में भी छानबीन की जा रही है। जानकारी मिली है कि कटारिया के पॉलिटिकल कनेक्शन रहे हैं। कटारिया बड़े पैमाने में लेन-देन कर दूसरों को तगड़े ब्याज पर फाइनेंस करते हैं। टीम इस पर छानबीन कर रही है।

भारी भरकम पुलिस बल रहा मौजूद

भारी-भरकम पुलिस बल के साथ आयकर विभाग की टीम ने कटारिया समूह के इंदौर और खरगोन के ठिकानों पर छापा मारा। जानकी नगर निवासी सुखराज कटारिया की फर्म फाइनेंस सहित अन्य कारोबार में लिप्त हैकटारिया की खरगोन में दिलीप दाल मिल नामक फर्म है। इसके अलावा ब्याज-बट्टे का भी धंधा है। उनके कई फाइनेंसरों से लेन-देन की जानकारी मिली है। कटारिया ने दाल मिल के अलावा रियल एस्टेट में भी निवेश कर रखा था। इनके तार बड़े नेताओं से भी जुड़े हैं। विभाग के पास नेताओं को फंडिंग करने की जानकारी भी थी जिसके आधार पर कार्रवाई की गई है।आयकर विभाग की इस कार्रवाई में इंदौर-भोपाल, ग्वालियर सहित बाहरी राज्य से आए अधिकारी शामिल रहे, जो एक दर्जन से अधिक वाहनों में पुलिसकर्मियों के साथ इन ठिकानों पर पहुंचे।

रतलाम – खरगोन में इनके यहां पहुंची टीम

कटारिया के ठिकानों के अलावा आयकर विभाग की टीम खरगोन में श्री प्रभु ट्रेडर्स, श्री हरि इंटरप्राइजेस, राधाकृष्ण मथुरावाला दाल मिल, आरएम ईशान कोल्ड स्टोरेज पर भी गई। यहां भी लंबी कार्रवाई की जा रही है ।खरगोन में दाल मिल कारोबारी नवनीता महाजन और नटवरलाल महाजन के ठिकानों से विभाग को 1.25 करोड़ नकद और 1.75 किलो सोने के जेवरात मिले। इसके अलावा रतलाम में हवाला कारोबारी मनीष और ब्लवीश पटवा के ठिकानों से भी विभाग को 1.75 करोड़ रुपए नकद मिले ।बताया जा रहा है कि कटारिया ग्रुप व अन्य जगहों से भारी मात्रा में दस्तावेज मिले हैं, खासकर कच्ची पर्चियां मिली है। आयकर विभाग इन सभी को जब्ती में ले रहा है।

इंदौर हाई कोर्ट का बड़ा फैसला

मेडिकल छात्रा को सीट छोड़ने पर नहीं भरने होंगे रुपए, सरकार से जवाब भी मांगा

इंदौर (नप्र)। इंदौर हाई कोर्ट ने सरकारी मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिलने के बाद सीट खाली करने के बदले छात्रा को 30 लाख रुपए नहीं भरने पड़ेंगे। कॉलेज उसे बगैर रुपए लिए ही उसके ओरिजनल दस्तावेज लौटाएगा। यह फैसला इंदौर हाई कोर्ट ने छात्रा की याचिका पर दिया। बता दें कि किसी सरकारी मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिलता है तो उसे पढ़ाई पूरी करना जरूरी है। यदि छात्र या छात्रा किसी कारण से पढ़ाई बीच में छोड़कर सरकारी कॉलेज में सीट खाली करना चाहते हैं तो इसके ऐवज में उसे 30 लाख रुपए जमा करना होता है। तभी उसे ओरिजनल दस्तावेज वापस मिल सकते हैं। यह प्रावधान केवल सरकारी कॉलेजों के लिए है। ताजा मामले में भी ऐसा हुआ लेकिन छात्रा की ओर से जो दलीलें दी गईं, उसके चलते उसे राहत मिली है। हाई कोर्ट को यह जानकारी दी कि छात्रा खुद की इच्छा से सीट नहीं छोड़ना चाहती थी बल्कि सरकारी व्यवस्था के कारण वह नहीं पढ़ पाई है। हाईकोर्ट में छात्रा के वकील आदित्य संघी ने बताया छात्रा वर्तमान में मध्य प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य विभाग में नरसिंहपुर जिले में मेडिकल ऑफिसर के पद पर है। वह स्कु रेडियोथैरेपी भी करना चाहती थी इसके लिए उसे सरकारी एमजीएम कॉलेज इंदौर आवंटित हुआ था। उसे एडमिशन लिया और मप्र सरकार का कर्मचारी होने के नाते उससे पढ़ाई के लिए एनओसी(अनापत्ति प्रमाण पत्र) मांगा। मप्र सरकार ने आवेदन के दो साल बाद भी एनओसी नहीं दी। इस बीच ही जिस कोर्स के लिए एडमिशन मिला था, वह पूरा हो गया। यानी वह पढ़ ही नहीं पाई। ऐसी परिस्थिति में छात्रा जिम्मेदार नहीं मानी जा सकती।हाई कोर्ट ने छात्रा की ओर से दिए तर्क से सहमत होते हुए पक्ष में फैसला दिया। एमजीएम कॉलेज इंदौर से कहा कि वह छात्रा से बिना 30 लाख रुपए जमा कराए ही उसे अपने ओरिजनल दस्तावेज वापस करे। वकील का कहना है कि यह संभवतः पहला मामला है जब याचिकाकर्ता ने 30 लाख रुपए के सीट छोड़ने के बांड के प्री-पीजी नियमों को अल्ट्रा वायर्स के रूप में चुनौती दी। इससे मप्र के मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस और पीजी पाठ्यक्रम के हजारों छात्रों को राहत मिल सकती है।

2 साल तक पढ़ाई के लिए किया एनओसी मिलने का इंतजार

याचिकाकर्ता डॉ.अदिति धुर्वे हैं। उन्हें 2022 में एमजीएम कॉलेज इंदौर में एमडी रेडियोथेरेपी की सीट आवंटित हुई। दस्तावेज जमा किए। डॉ.अदिति 2021 से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नरसिंहपुर में मेडिकल ऑफिसर के रूप में पदस्थ थीं। नियमानुसार, वह सरकारी नौकरी के साथ पढ़ाई के लिए एमएमएचओ नरसिंहपुर और आयुक्त लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग भोपाल से एनओसी लेना जरूरी है। दो साल के इस कोर्स के लिए उसे आखिरी तक अनुमति नहीं मिली थी।

जयंती

चेतनादित्य आलोक
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भोजपुरी के तुलसीदास रामजियावन दास बावला

ये अनगिन रहस्यों और तिलिस्मी कथा-कहानियों को अपने गर्भ में छिपाए रखने वाली चंदौली विंध्यपर्वत श्रृंखला हो या उसके बीच से बहते झरनों एवं नदियों की कल-कल आवाजें हों, नौगढ़ और चुनारगढ़ की घाटियों में बिखरीं-पसरीं चंद्रकान्ता की यादें हों या चंद्रप्रभा वन्य जीव अभ्यारण्य में उछलते-कूदते, भागते-दौड़ते, खुशहाल जिंदगी जीते वन्य पशु हों, सामाजिक सद्भाव के प्रतीक लतीफ शाह बाबा की दुआएं हों अथवा राजदरी एवं देवदरी जैसे मनोरम जलप्रपात, इन सबके बीच विंध्य पहाडियों की गोद में बसेभीखमपुर गांवकी गलियों और मोहल्लों में ग्रामीण भारत की आवाज माने जाने वाले और 'भोजपुरी भाषा के तुलसीदास' कहे जाने वाले महान कवि रामजियावन दास 'बावला' के गीत और कविताएं कानों में आज भी गूंजती हुईं प्रतीत होती हैं। विश्वास कीजिए कि एक जून 1922 को उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले के चकिया अनुमंडल स्थित भीखमपुर गांव में जन्मे कवि बावला जी की कविताओं तथा गीतों ने भारत माता के ग्रामीण अंचलों को आज भी गुंजायमान रखा है। उनकी कविताओं और गीतों की महक गांव की खेतों, खलिहानों और पगडंडियों से बारिश, तपिश और शीत के बीच महिलाओं, किसानों और मजदूरों के पसीने की खुशबू के साथ घुल-मिलकर पल-पल नूतन होती प्रकृति के शाश्वत् नियमों का अनुसरण करती हुई आगे बढ़ती जाती है।

तात्पर्य यह कि महिलाओं, मजदूरोंऔर किसानों के जीवन को समग्रता में अभिव्यक्त करतीं बावला जी की रचनाएं भारत माता के ग्रामीण अंचलों में अपनी अमरता का उद्घोष करती हुई कहती हैं कि जब तक गावों में मजदूरी और किसानी बची रहेगी तब तक वह उनका अस्तित्व कायम रहेगा।कबीरदास, धरनीदास, धर्मदास, दरियादास, गुलाल साहब, भीखा साहब यानी भिखारी ठाकुर, लक्ष्मी सखी,धरीक्षण मिश्र, नर्मदेश्वर पाण्डेय, डॉ. रामविचार पाण्डेय, महेंद्र शास्त्री, रघुवीर नारायण, मनोरंजन प्रसाद सिंहा, दण्डी स्वामी विमलानंद सरस्वती, प्रसिद्ध नारायण सिंह, जगदीश ओझा 'सुंदर', प्रभुनाथ मिश्र और चंद्रशेखर मिश्र जैसे अनेक महान कवियों एवं गीतकारों की समृद्ध परंपरा को जीवित रखने वाले रामजियावन दास 'बावला' जी की रचनाओं में ग्रामीण भारतीय समाज और किसानों के जीवन की बेहद मार्मिक एवं अंतरंग व्याख्या मिलती है। बहुरंगी आयामों और वैविध्यपूर्ण शिल्प के धनी रचनाकार बावला जी की सेवक प्रकाशन ईश्वरगंगी, वाराणसी से प्रकाशित एकमात्र कृति 'गीतलोक' की भूमिका में पंडित विद्यानिवास मिश्र ने लिखा है- 'रामजियावन दास 'बावला' शुद्ध वाचिक परंपरा में कविता और जीवन को समाने वाले अपने ढंग के सचमुच ही बावले कवि हैं। उन्होंने 'बावला' उपनाम के भीतर अपनी सहज जीवन-निष्ठा छिपाकर रखी है।'

गंवई संवेदना की व्यावहारिक अनुभूतियों और भगवान श्रीराम के प्रति लोकमन की निष्ठा से परिपूर्ण बावला जी की एकमात्र प्रकाशित 'गीतलोक' नामक पुस्तक को पढ़ने के बाद पं. विद्यानिवास मिश्र ने बावला जी को 'भोजपुरी भाषा का तुलसीदास' कहा था। देखा जाए तो बावला जी ने दो प्रकार की कविताएं लिखीं। पहले उन्होंने रामचरित्र लिखा और फिर ग्राम्य जीवन का चित्रण किया। यानी उन्होंने राम से करुणा का आशीष लेकर ग्राम की ओर प्रस्थान किया था।यही कारण है कि उनकी रचनाओं के भावपक्ष में ग्राम्य जीवन भी राममय होता गया है।इसके बावजूद बावला जी की यह विशेषता रही है कि जब वे भगवान श्रीराम को गाते-गुनगुनाते हैं तो एक भक्त की तरह पूर्णतः श्रीराम के अनुगामी होकर और जब गांव की दशा-दिशा और दुर्दशा पर लिखते हैं तो गांव के 'लाल' बनकर।'रामचरित्र'शीर्षक अध्याय के अंतर्गत भगवान श्रीराम के वन प्रस्थान से पूर्व शोकाकुल माता कौशल्या के दुःख के वर्णन की मिसाल तो देखिए-

'जननी निठुर बिसरइहा न ललनवा हो दुधवा क करिह विचार, बनवा सुगम देखि दिनवा बितइहा काटि के बिपतिया अवधपुर अइहा, अवधि बिताई के न अइहा मोरे बबुआ हो अवधि अवधिए अधार। छतिया पथरवा क माता हम बनलीं 'बावला' विधाता क मरम नाहिं जनलीं, पूत परदेसवा में तपसी क भेषवा में भइल मोरि जिनिगी पहार।'(गीतलोक, पृष्ठ 41)

रामकथा के शबरी प्रसंग में बावला जी की लेखनी ने मानो भोजपुरी की सारी मिठास ही उड़ेल कर रख दी है। वे लिखते हैं-'कूदत बा हरिना हिय में सेवरी से मिलैं के बदे अगुतइलैं, सील सनेह क पालनहार गंवार क जाति विचार न कइलैं, भाव क भूखल भाउक हो अपने पर आयल भीर भुलइहैं, जात क पात क बात कहां पुरखा बतलावैलें जूठन खइलैं।'(गीतलोक, पृष्ठ 89)इसी प्रकार किसानों की महिमा का गुणगान करते हुए उन्होने लिखा- 'ढोवै दुनिया भर क भरवा खेतिहरवा, केहु न भुलाई रे किसान तोर करनी, तोहईं खेवइया सारी दुनिया क तरनी, भोग रोग जानि के मचान क निवासी, खेत में किसान क प्रयाग तीर्थ कासी, बावला कुदार लेइके कन्हवा पर हरवा खेतिहरवा।'(गीतलोक, पृष्ठ 148) बावला जी ने दहेज पीड़िता महिलाओं के दुःख का भी बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है- 'बाबू दहेज कमी रहले मोहिं मारति वा गरियावै जेठानी, जेठ न खात बा मोर बनावल सासु क टांस न जात बखानी, बाप समान सगा ससुरू उनहूं न पियैं मोरे हाथ क पानी, आउर तौ सब आउर बा मुंह से नहिं बोलत मोर परानी।'(गीतलोक, पृष्ठ 160)बावला जी विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे। दरअसल, परिवार में शिक्षा की कोई परम्परा नहीं थी, फिर भी बावला जी का नामांकन गांव के ही प्राथमिक पाठशाला में करा दिया गया था।वहां से किसी तरह उन्होंनेकक्षा (दर्जा)तीन तो पास कर लिया,लेकिन चौथे में पहुंचकर वे असफल हो गए।बाद में मित्रों का सहयोग पाकर नकल के सहारे उन्होंने कक्षा चार भी पास कर लिया।

हालांकि नकल से पास कर वे बहुत खुश नहीं थे। सच कहें तो पास या फेल होना उनके लिए महत्वपूर्ण था ही नहीं। उनके लिए तो पाठशाला में पढ़ाई करना भी महज जीवन का एक अनुभव ही था। बहरहाल, नकल कर पास करने पर मित्रों द्वारा ताने मारे जाने की बात बावला जी ने स्वीकार करते हुए बाद में अपने पिता से कहा था- 'बाबू आजौ हमरे मित्र ताना देवेलन की हम तोहके नकल देखाईले रहली त पास हो गईला, नहीं त चार ना पास भईल होता।' यह जानकर आश्चर्य होता है कि महज कक्षा चार पास व्यक्ति, जिसे शास्त्रीय साहित्यिक रचना विधान का कोई भी ज्ञान नहीं था, उसने भोजपुरी भाषा में इतनी उत्कृष्ट कविताओं और गीतों की रचना कर डालीं कि पं. विद्यानिवास मिश्र जी जैसे महान साहित्यकार भी अचरज में पड़ गए और उन्होंने बावला जी को 'भोजपुरी भाषा का तुलसीदास' कह दिया।बावला जी वाचिक परंपरा के रचनाकार थे।वे भैंस चराते-चराते इधर-उधर घूमते रहते और बेहद सहज भाव से तुकबंदी करते रहते थे। बिल्कुल निस्पृह होकर पक्कड़ी करते-करते किसी संत की भांति उनके तमाम भावों और अनुभूतियों ने कविताओं और गीतों में ढलकर जन मानस की भूख-प्यास मिटाई।अपनी रचनाशीलता के संदर्भ में स्वयं बावला जी ने लिखा है- 'भइंस चरावत-चरावत तुकबंदी करे लगलीं...।

बावला जी के संबंध में पं. विद्यानिवास मिश्र ने बिल्कुल ठीक कहा है कि बावला जी निःस्पृह हैं... पक्कड़ कवि हैं... और उनका यह देवदुर्लभ गुण कवि चेतना से जुड़कर अपने आप में सिद्ध रचनाकारों के लिए भी स्पृहणीय है। बता दें कि पंडित मिश्र जी ने बावला जी कविताओं को न केवल भोजपुरी और न ही समस्त हिंदी क्षेत्र तक सीमित माना, बल्कि संपूर्ण भारत के लिए बहुमूल्य सांस्कृतिक अवदान माना था। पंडित जी ने उनकी कविताओं में भारतीय प्रतिभा की सनातन सक्रियता का प्रबल प्रमाण होने का दावा किया था। जीवन श्रद्धा से परिपूर्ण बावला जी कविताएं अत्यंत जीवंतता और मोहकता के साथ गंवई जीवन-दर्शन को अभिव्यक्ति प्रदान करती हुई वाचिक परंपरा को आगे बढ़ाती हैं। उसी वाचिक परंपरा के दस्तावेजीकरण का जब समय आया तब कहा जाता है कि काशी के प्रकाशकों ने उनसे उनका नाम जो तब रामजियावन दास था, को छोटा करने के लिए कहा।शुद्ध, सहज, पक्कड़ कवि को कुछ न सूझा, लेकिन अगली सुबह दशाश्वमेध घाट पर स्नान के लिए जाने के क्रम में शायद उनकी अस्त-व्यस्तता को देखकर किसी ने उन्हें 'बावला' कहकर पुकारा। उसके बाद प्रसन्नचिश्र बावला जी ने प्रकाशकों के समक्ष अपने लिए उपनाम के रूप में 'बावला' प्रस्तावित कर दिया। इस प्रकार उनका नाम रामजियावन दास 'बावला' हो गया।

कविता

रंगीन स्मृतियाँ

सुधीर कुमार सोनी

एक श्वेत-श्याम तस्वीर है, मेरे पास
तस्वीर में एक घर अभी भी बचा है
आँगन और कुआँ बचा है
जैसे स्वप्न में बचा है ।

तस्वीर में परिवार के लोग हैं
जिनकी उम्र ठहरी हुई है
जैसे घर की उम्र ठहरी हुई है ।

तस्वीर में पूर्वज, वैवाहिक बँधन में बधें
बचे हुए हैं
कुछ पौधे खिले हुए बचे हैं
एक गाय जिसकी पीठ पर चिड़िया बैठी है
तस्वीर में बचे हुए हैं ।

जिस दिन की तस्वीर है
उसकी तारीख का दिन और महीना धुंधला गया है
तस्वीर के पीछे, वर्ष लिखा बचा हुआ है ।

तस्वीर में पुराने दिन के
बीते पल ठहरे हुए हैं।

श्वेत-श्याम तस्वीर की
मेरे पास, रंगीन स्मृतियाँ बची हुई है।

आंच वाले दिन

कमलेश कुमार दीवान

ऊगा सूरज , सिर चढ़ें फिर आंच वाले दिन
आए अब परिताप लेकर,आंच वाले दिन
आंच वाले दिन।।

फिर बड़े होने लगे दिन , रातें छोटी पर सुहानी हैं
अंगना में है बिछौना,आकाश में तारों की छानी हैं
कहां आते थे ऐसी बात और सौगात वाले दिन।
ताप वाले बहुत संताप देते पिल पड़े पल- छिन।
आंच वाले दिन।

अब चलेंगी आग बरसाती हवा पुरवाईयां भी
मौन से भी छल रही चुप चुप थकी दुश्वारियां भी
दोपहर में अब कहां वह आम्र कुंजी छांव पाएं
कहां अंगना ,नीम नीचे खाट पर चादर बिछाएं
घर सभी आंगन नहीं,हिराए परिहास वाले दिन
आंच वाले दिन।

लघुकथा

ब्रजेश कानूनगो

अदृश्य बोझ

सुनो इस्माइल, इधर तो आओ, जरा मदद करो!

वह चौंक पड़ा। शायद ही किसी ने उसे कभी उसके असली नाम से पुकारा होगा। स्कूल की छुट्टी वाले दिन अपने अब्बू के साथ कस्बे से कोई चार किलोमीटर दूर स्थित छोटे से रेलवे स्टेशन पर पिता के साथ पहुंचता, स्टेशन पर कैंटीन वाले और अन्य कर्मचारी यही बोलते कि आज तो कुली का बेटा भी आया है साथ में। पिता पुत्र की पहचान बस कुली और कुली पुत्र जितनी ही थी।

कस्बे से दूर स्थित उस स्टेशन पर दो चार रेलगाड़ियां ही रुकती थीं। अल सुबह छह बजे एक पैसेंजर गाड़ी मुंबई की ओर से और दूसरी दोपहर तीन बजे दिल्ली से। आस पास के गांवों के कुछ लोग जो बाहर नौकरी गए थे या फौज में सिपाही थे उनका आना जाना बना रहता था। स्टेशन पर एक मात्र वही था जो कुली था। पहले पिता यात्रियों का सामान सिर पर लादकर तांगे तक पहुंचाता था फिर बेटे ने यह काम संभाल लिया। बस ऐसे ही गुजर बसर हो रहा था उसका और उसके परिवार का।

समय के साथ उसका काम भी धीरे धीरे कम होता गया। यात्रियों ने भारी भरकम बॉक्स की जगह पहियों वाले सूटकेस और अटैचियों का इस्तेमाल शुरू कर दिया। कभी कभी ही सुनाई देता कुली...कुली इधर यह सामान ले चलो...। अलबत्ता स्टेशन मास्टर के सहयोग से किसी बीमार यात्री की व्हील चेयर धकेलने का काम भी थोड़ा बहुत मिल जाता था।

सरकार ने भले ही तिरस्कार भाव वाले कुली शब्द की पुरानी छबि बदलने के प्रयास में सहायक शब्द को चलन में बढ़ाने के निर्देश दिए थे किंतु वह बस कागजी ही रहे। कुली, सुनो कुली! इधर आओ कुली! कितना लोगे कुली...! कुली को इन शब्दों से मुक्ति नहीं मिली। कुली कुली ही रहा। अंततः मान लिया था, कुली जीवन तेरी यही कहानी।

लेकिन जीवन की हर कहानी में कभी न कभी कोई क्षण तो ऐसा आता ही है जो चमत्कार से कम नहीं होता।

यह कौन है जो उसे उसके नाम से पुकार रहा है? अचरज से उसने अभी अभी रुकी गाड़ी के स्लीपर डिब्बे की खिड़की की ओर देखा। एक फौजी उधर इशारे से बुला रहा था। दौड़कर वह डिब्बे में चढ़कर यात्री तक पहुंचा। फौजी के एक हाथ में प्लास्टर चढ़ा था, दाहिने पांव में भी

जख्म थे। बैसाखी के सहारे वह अपनी सीट से उठा तो इस्माइल ने उसे सहारा देकर प्लेटफार्म पर उतारा। बैग संभाला। दौड़कर स्टेशन मास्टर के ऑफिस से व्हील चेयर ले आया।

पहचाना नहीं इस्माइल? मैं दिनेश, पाटीदार जी का बेटा हूं। तुम्हारी कक्षा में तो पढ़ता था। भूल गए क्या? फौजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

इस्माइल हतप्रभ था। खुश भी था। उसे लगा आज वह किसी यात्री का बोझा नहीं ढो रहा है बल्कि एक यात्री ने उसे नाम से पुकारकर उसका अदृश्य बोझ उसके ऊपर से उतार दिया है।

रेलगाड़ी धीरे धीरे स्टेशन छोड़ गई।

कविता

हम और प्रकृति

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

जो प्रकृति नहीं तो हम कहाँ !
हमारे तो सारे सुख हैं
प्रकृति के दरमियाँ
धरा जब पहनती है
प्रकृति का आभूषण
सौ कोटि खिलती है
उसकी मुस्कान
इसी मुस्कान से
हम सभी हो जीवंत
पाते हैं सुखमय जहान।

जलचर, नभचर,
खग -विहग
वन्य जीवन और
उसका खिलंदड़ीपन
अर्श छूती पर्वत श्रृँखलाएँ
पुलकित होते वृक्ष,
चारू लताएँ
वनस्पतियाँ, औषधियाँ
सूर्य- चँद्र की जीवन
लुटाती रश्मियाँ
अद्भुत यह सभी
दृश्यावलियाँ।

रिमझिम बूँदों की कहानी
कहता है जल चक्र
जिनसे चलता अवनि पर
जीवन चक्र
हरीतिमा से श्रृँगारित
प्रकृति का यह विपुल सौंदर्य
हमारी साँसों की है अमानत ।

प्रकृति ने पहने हैं
झरनों के गहने
सुगंधित पुष्पों के पैरहन
हवाओं की बाँधी है पाजेब
और जीवन तान छेड़
अपने सभी सहचरों संग
हो रही मस्त मगन।
इस लय में लीन है
धारिणी का कण-कण।

इनके बिना जिंदगी
बेजान मृत है
प्रकृति के साथ
खिलवाड़ करने वाले
भोग विलास के ठेकेदार
अपनी ही साँसों को
गिरवी रख कर
चल रहे हैं उस पथ पर
बना रहे खुद को
कंक्रीट का बीहड़
जबसे प्रकृति से
मानव की ठनी है
इंसानों की जां पर बनी है।

शुभम भवतु का
आशीर्वाद देती हुई प्रकृति
किस प्रेम से दोनों हाथों से
अपने अनमोल खजाने
हम पर लुटा रही है
हमें हृष्ट- पुष्ट तंदुरुस्त,
जीवंत बना रही ।

वहीं लोलुप, स्वार्थी
मानव को देखो
प्रकृति की गोद उजाड़
अपनी ही ?साँसें
उखाड़ रहा है
जीवनदायिनी प्रकृति के
आँचल को
कर रहा तार-तार
अपने लिए बना रहा
जीवन दुश्वार।

सीखना होगा मानव को
प्रकृति के संग रहना
मर्यादित विशेष
वरना उसके भी अवशेष
नहीं रह जाएंगे शेष।

लघुकथा

अविनाश अग्निहोत्री

पानी

एक बात बताइए पापा कालोनी में जब भी कोई उत्सव आता है। तब तो आप उसमें चंदा देने में बड़ी कंजूसी करते है।और हमें भी जब तब कहते रहते है कि पैसे बड़ी मेहनत से कमाए जाते है।

इसलिये इसे बड़ी समझदारी से खर्च करना चाहिए। फिर अब जब गली में सार्वजनिक बोरिंग करने की बात आई तो अपना निजी बोरिंग होते हुए भी आपने उसकी लागत की आधे से अधिक राशि चंदे में दे दी।

और आज उसमें पानी आने पर पूरे मोहल्ले में मिठाई बाट दी ऐसा क्यों? अपने पापा को बहुत खुश देख शुभ ने उनसे पूछा।

क्योंकि मैं जब बहुत छोटा था तब मैंने अपनी मां को बड़ी दूर से पैदल सर पर पानी लाते देखा है बेटा।

पिता ने गंभीर स्वर में बेटे के सर पर हाथ फेरते हुए कहा।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुस्तक समीक्षा

राजेंद्र बज
समीक्षक

बहुआयामी संदेश देती मीरा जैन की लघुकथाएं

कुछ अत्यंत सटीक एवं अर्थपूर्ण शब्दों के मोती पिरोकर गूंथी गई है मीरा जैन की सदाबहार लघुकथाएं। जीवन के यथार्थ से रूबरू करा कर सामाजिक समरसता, मानवता और जन-जागृति का संदेश देती लघुकथाएं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध शंखनाद करती प्रतीत होती है। अत्यंत ही सहज-सरल शब्दों में उत्कृष्ट जीवन मूल्यों को रेखांकित करते हुए समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणा प्रदान करती हर एक लघुकथा का अपना एक अलग ही महत्व है। भाषा शैली का प्रवाह बहुत प्रभावी बन पड़ा है। शहरी और ग्रामीण संस्कृति पर आधारित लघुकथाओं की तो अपनी एक अलग ही छटा है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से समय-समय पर प्रकाशित 100 लघुकथाओ का संग्रह एक ऐसा दस्तावेज बन गया है - जो जन-जन को जीवन जीने की सही सीख और समझ प्रदान कर सकता है। विगत लगभग 30 वर्षों से सतत लेखन में सक्रिय श्रीमती मीरा जैन लघुकथाओं के माध्यम से पिछड़ी हुई मानसिकता पर करारा तंज करते हुए महिला सशक्तिकरण की पैरवी करती प्रतीत होती है। अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी कुत्सित परंपराओं के विरुद्ध कुछ लघुकथा जन जागृति का व्यापक संदेश देती है। कुछ लघुकथाओं में राजनीतिक चुटकी भी बखूबी ली गई है।

पारिवारिक ,सामाजिक एवं सार्वजनिक जीवन में अंतरंग और बहिरंग की समानता चित्त की स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक तत्व है। इस संदर्भ में दोहरे व्यक्तित्व पर करारा प्रहार करते हुए आदर्श जीवन शैली को आत्मसात करने पर जोर देती लघुकथाओं का भी इसमें समावेश है। समग्र रूप से विभिन्न लघुकथाओं का बहुआयामी संदेश बहुत व्यापक है। इसके अतिरिक्त लघुकथाओं के पात्र के रूप में महिला एवं पुरुष के साथ-साथ बाल वर्ग को भी सम्मिलित किया गया है। जिसके चलते परिवार के हर सदस्य के लिए यह पठनीय तो है ही।

आमतौर पर उपन्यास एवं कहानियों का अपना एक अलग महत्व होता है लेकिन वर्तमान आपाधापी के दौर में पठन-पाठन हेतु लघुकथाओं को अधिक पसंद किया जाने लगा है। वैसे भी चंद मिनटों में गागर में सागर समेटे किस्सागोई के रूप में विभिन्न पात्रों के माध्यम से दिया गया संदेश गंतव्य तक प्रभावी तौर पर लघुकथा के माध्यम से पहुंच जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत लघुकथा संग्रह का प्रकाशन पाठकों के लिए नई संभावनाओ के द्वार खोलता है। हर एक परिवार के लिए यह पुस्तक जीवन की दशा एवं दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

पुस्तक परिचय -
पुस्तक का नाम - मीरा जैन की सदाबहार लघुकथाएं
लेखिका - मीरा जैन
प्रकाशक -जिज्ञासा प्रकाशन प्रा. लि. गाजियाबाद
मूल्य - 250/

विज्ञापनः भूमिका एवं उसकी उपयोगिता

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

अ बार-बार दोहराव के बल पर असत्य को भी सत्य साबित करने का पहल लगभग चल निकला है। हालांकि सभी बातें असत्य हो ऐसा भी नहीं है पर विज्ञापन में अधिकांशतः उपभोक्ता को बहलाने हेतु बड़े-बड़े लालची तीर चलाए जाने लगे हैं। लोग जिस पर विश्वास करते हैं, उसके कहे हर बातों को आँख बंद करके मान लेते हैं, जिसका फायदा विज्ञापन के निर्माण में लगे लोग लेते हैं। ऐसा लगने लगा है कि आज विज्ञापन की मायावी दुनिया ही तय करती है कि उपभोक्ता को बाजार से कब और क्या खरीदना है। वैसे खरीदना न खरीदना तो ग्राहक के मन की ही बात है पर विज्ञापन के मायावी प्रकोप का असर कहें कि अधिकांश लोग इसके जाल में फँस ही जाते हैं। बाकी रही-सही कसर पूरी कर देती है आस-पास की दुनिया। दुनिया संचार माध्यमों पर इतनी निर्भर हो गई है कि, खुद भी सोच सकती है, वहाँ तक सोच ही नहीं पाती। सामान के विक्री पर उत्पादन की अपनी विशेषता तो होती ही है पर विशेष असर विज्ञापन का ही होता है। वैसे अगर विज्ञापन के मुख्य कार्य को देखा जाय तो ग्राहकों को वस्तुओं से परिचय करवाना, उसके विशेषताओं से लोगों को रूबरू करवाना होता है। जिसके लिए पूरी टीम अपने-अपने स्तर पर जी जान से लगी होती है जहाँ नित नवीन खोज हेतु सपनों का आसमान बसता है। विज्ञापन वस्तुओं के विक्रय की कला है। विज्ञापन वि तथा ज्ञापन शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ क्रमशः विशिष्ट एवं सूचना है। किसी भी वस्तु के बारे में विशिष्ट सूचना उपभोक्ता तक विशेष तरीके से पहुँचाना ही विज्ञापन है। उत्पाद एवं उपभोक्ता के बीच सेतु के रूप में विज्ञापन कार्य करता है पर वही सेतु कभी-कभी रास्ता भटकाने का कार्य करता है बल्कि आज का अधिकतर विज्ञापन ऐसा ही है।

विस्टन चर्चिल ने विज्ञापन के बारे में गजब कहा है। उनका कहना है कि टकसाल के अतिरिक्त कोई भी बिना विज्ञापन के मुद्रा का उत्पादन नहीं कर सकता।

आज जब सब कुछ हवा में ही तय होता है, हवा के इस दौर में भी विज्ञापन ही सब कुछ है। उत्पादक विज्ञापन पर खर्च करने में जरा सा भी नहीं हिचकते। बात विज्ञापन और कला की करें तो कलाकार निरंतर प्रयास से उत्पादक के द्वारा किए गए दावे को ध्यान में रखते हुए ऐसे दृश्य तैयार करता है कि ग्राहक वस्तु के प्राप्ति हेतु लहालोट हो उठे। कलाकार के कल्पना का ही कमाल होता है कि जरूरत न होने के बावजूद भी लोग सामानों को मंगाने लगते हैं। भारी उत्पादन का कारण एवं परिणाम विज्ञापन है। नाइट्रोम के इस कथन ने विज्ञापन को बाकायदा बयां कर दिया है। समय ही ऐसा है कि सुबह से लेकर शाम तक कई रूपों में विज्ञापन हमारे सामने होता है और हम लाख चाहकर भी इससे बच नहीं सकते। अखबार पलटते ही विज्ञापन, टीवी देखते ही विज्ञापन, रेडियो सुनते ही विज्ञापन, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टा हर जगह विज्ञापन की दुनिया से हम घिरे हुए हैं। बाहर निकलते ही होर्डिंग्स, बैनर, पोस्टर आदि हमें ललचाने लगते हैं। मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी विज्ञापन हमारे भावनाओं से खेलते हैं। इन सभी के पीछे जो टीम कार्य करती है उसे विज्ञापन एजेंसी कहा जाता है जहाँ इससे संबंधित सभी विषय के विशेषज्ञ बैठते हैं। उपभोक्ताओं के नब्ज़ को टटोलने वाले मनोवैज्ञानिक, कॉपी राइटर, क्रियात्मक रुप से संपन्न मझे हुए कलाकारों, चित्रकारों, भाषा के जानकारों का जमावड़ा होता है यहाँ। इतने

सुनियोजित तरीके से किए कार्य को कोई इग्नोर कैसे कर सकता है भला। विज्ञापन के विश्वसनीयता पर बहस भी हमेशा होती रही है। जबरदस्त आलोचना से होकर कई बार गुजरना पड़ा है इसे। कटु अनुभवों से भी पाला पड़ता रहा है लेकिन तमाम जद्दोजहद के बावजूद विज्ञापन के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। विज्ञापन हमेशा से हमारे बीच रहा है। विज्ञापन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। ललित कला एवं उपयोगी कला में उपयोगी कला के अंतर्गत आता है उपयोगी कलाकार, जिसका कार्य ही होता है ऐसे चित्रों का निर्माण करना जो लोगों के उपयोग में आ सके और फिर वो विज्ञापनदाता भी हो सकता है और ग्राहक भी। एक को बेचने की आवश्यकता है तो दूसरे को खरीदने की, फायदा दोनों का है। कलाकार या फिर पूरी एजेंसी बस पुल के रूप में दोनों को एक दूसरे तक पहुँचाने का कार्य करती है। कभी-कभी भ्रामक विज्ञापन भी सामने आ जाते हैं जिससे ग्राहकों का विश्वास विज्ञापन से उठ जाता है। अतः नैतिक एवं अनैतिक का दायरा यहाँ भी होना चाहिए। विज्ञापनदाता को चाहिए कि वही विशेषता एजेंसी को बताए जो वाकई उत्पाद में हो तथा विज्ञापन एजेंसी को अपने कार्य संपादित करने से पूर्व सभी बातों पर गहनता से विचार करते हुए विज्ञापनदाता के कहे हर बातों को जाँच लेने के बाद ही विज्ञापन का निर्माण करना चाहिए ताकि ग्राहक खुद को ठगा हुआ महसूस ना करे। विज्ञापन दबी, छिपी इच्छाओं को आकाश प्रदान करने का भी कार्य करता है। विज्ञापनों को ऐसे तैयार किया जाता है कि विज्ञापित उत्पाद का यदि आपने प्रयोग नहीं किया तो आप बहुत पीछे हो जायेंगे, ऐसा महसूस होता है उपभोक्ता को। 'अगर ये नहीं पहना तो समझो आज तक आपने कुछ नहीं पहना' जैसे शब्दों का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है या यूँ कहें कि मन के किसी कोने में दबी इच्छाओं को ललकारने का कार्य भी विज्ञापन का ही है और सामान्य इंसान में भी समाज के अन्य से होड़ की पिपासा जगा देती है विज्ञापन फलतः जिसकी आवश्यकता इंसान को नहीं भी है उसे भी देखा-देखी में खरीद लिया जाता है। आज का बाजार ही विज्ञापन के भरोसे है। कुछ विज्ञापन पुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों हेतु अलग-अलग भी बनाए जाते हैं। परिवार में रिश्तों के महत्व को देखते हुए उन्हें यह भी अंदाजा होता है कि जिस सामान के लिए बच्चा बोल देगा पिता जरूर दिलाएगा इसलिए अलग-अलग किस्म और उम्र हेतु भी विज्ञापन तैयार किया जाता है। बाइक के विज्ञापन को इस तरीके से डिजाइन किया जाता है कि उस पर बैठने वाला खुद को समाज से अलग और चुस्त-दुरुस्त समझ बैठता है बाकी में हीन भावना जागृत हो इसका भी ध्यान रखा जाता है ताकि वो भी जल्दी से इसे खरीद कर अपने श्रेणी में बढ़ोत्तरी करते हुए एक सीढ़ी आगे बढ़ सके और विज्ञापन का कार्य भी पूरा हो सके।

आग बरसाती गर्मी और मेहनतकश कामगार

पर्यावरण

निर्मल रानी

लेखिका पत्रकार हैं।

ल गभग पूरे विश्व में इस बार भीषण गर्मी पड़ रही है। मौसम वैज्ञानिकों द्वारा इस बात की जानकारी पहले ही दी जा चुकी थी। आज जब सूर्य आग उगल रहा है और धरती पर आग बरस रही है तो मौसम वैज्ञानिकों की इस भविष्यवाणी को सही साबित होते हुये देखा भी जा रहा है। ख़ासकर भारत सहित कई दक्षिण एशियाई देश इस समय भयंकर गर्मी व तपिश की मार झेल रहे हैं। न केवल सुबह होते ही आग बरसनी शुरू हो जाती है बल्कि गर्मियों की रात में जो मौसम थोड़ा बहुत खुशगवार हुआ करता था वह रातें भी अब पूरी तरह से गर्म होने लगी हैं। परिणाम स्वरूप बाज़ारों व सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहता है। आम लोग सिर्फ़ किसी बेहद ज़रूरी कामों से ही बाहर निकलते हैं अन्यथा बाज़ार की ख़रीद फ़रोख़्त के लिये शाम को ही घरों से निकल रहे हैं।

परन्तु अपनी ड्यूटी निभाने वाले और मेहनतकश रिक्शा रेहड़ी वालों की क़िस्मत में आराम कहाँ ? रेलवे के मेहनतकश कर्मचारी,ख़लासी,गैंगमैन इसी प्रचंड गर्मी में तपते हुये रेल ट्रैक पर कहीं रेल की पटरी बदल कर रहे हैं तो कहीं भारी भारी स्लीपर इधर से उधर ले जा कर हमारी सुरक्षित रेल यात्रा सुनिश्चित कर रहे हैं। पुलिस के जवान मोटी वर्दियां टोपियां पहन कर सड़कों पर ड्यूटी दे रहे हैं। ट्रैफ़िक के जवान तपते सूरज की परवाह किये बिना चौक चौराहों पर खड़े होकर हमसबको सुरक्षित यातायात देने के लिये प्रतिबद्ध हैं। भारत में अब तक सौ से अधिक लोगों के इस गर्मी की चपेट में आकर मरने की ख़बर है। ज़रा सोचिये इसी गर्मी में होने वाले भीषण अग्निकांड में जो फ़ायर फ़ाइटर्स आग बुझाते हैं वे कितनी गर्मी का सामना करते होंगे? भारत के जिन शहरों में 40 डिग्री तापमान में हाहाकार मच जाता था उन्हीं इलाक़ों में पारा 50 तक पहुँच गया है और कहीं कहीं तो 50 डिग्री से भी ऊपर चले जाने का समाचार है। जैसलमेर में बंगाल के जलपाईगुड़ी का रहने वाला 173 बटालियन का अजय कुमार नामक एक बी एस एफ़ का जवान अपनी ड्यूटी पर गर्मी के ताप को सहन न कर पाने के कारण अपनी जान गँवा बैठा। उत्तर भारत के कई इलाक़े गर्म हवा और लू की चपेट में हैं। इसी मौसम में कहीं कोई बुज़ुर्ग रिक्शा चलाते दिखाई देगा तो कोई भरी वज़न सिर पर उठाये। निर्माण क्षेत्र में तो करोड़ों लोग मिस्त्री व मज़दूर तपती धूप में खड़े होकर काम करते दिखाई देंगे।

दूसरी तरफ़ ईश्वर की कृपा प्राप्त सुविधाभोगी व आराम परस्त वर्ग प्रकृति के इस प्रकोप से बचने के लिये तरह तरह की सुविधाओं का उपभोग कर गर्मी सी निजात पाने की कोशिश करता है। संपन्न वर्ग घरों में ए सी से लेकर कारों व कार्यालयों में भी ए सी का इस्तेमाल करता है। इसका परिणाम यह होता है कि जहाँ कारों से निकलने वाला ज़हरीला धुआं गर्मी के साथ साथ वातावरण के प्रदूषण को बढ़ता है वहीँ ए सी से निकलने वाली गर्मी भी पूरे वातावरण को और भी गर्म करती है। अत्यधिक बिजली खपत के चलते इन दिनों बिजली की कटौती भी खूब होती है। बेशक यह सुविधासंपन्न लोगों का अधिकार भी है कि वे अपनी ज़रुरत के अनुसार सुविधाओं का इस्तेमाल भी करें। परन्तु इस तपती धूप व आग उगलती गर्मी में हम सब की सुविधाओं के लिये अपनी ड्यूटी निभाने वालों को नज़रअंदाज़ करना भी क़तई इंसानियत नहीं।

ऐसे में यदि हम देखें कि कोई भारी वज़न लादे हुये मेहनतकश अपनी रेहड़ी ठेला खींच रहा है तो जल्दी रास्ता देने के लिये बार बार हॉर्न बजाकर उसे परेशान करने या उसपर गुस्सा दिखाने के बजाये कार से उतरकर उसकी रेहड़ी ठेले को धक्का देकर उसकी मदद करने की कोशिश करें । इससे उसे सहायता भी मिलेगी साथ ही आपको यह एहसास भी होगा कि इतनी गर्मी में भारी वज़न खींचने वाले हम जैसे दूसरे इंसान पर क्या गुज़र रही होगी । कोई रेल कर्मी ,पुलिस कर्मी या ट्रैफ़िक वाला अथवा फ़ौजी धूप में ड्यूटी करता दिखाई दे तो उसे ठंडा पानी देने का प्रयास करें, किसी को छाता देकर उसे धूप से बचाने की कोशिश करें। संभव हो तो इस गर्मी में हाथ से हिलाने वाले पंखों का वितरण करें। ककड़ी,खीरा,तरबूज़ व ख़रबूज़ा जैसे गर्मियों में राहत देने वाले फल ज़रूरतमंदों को वितरित करें। ठन्डे पानी की छबीलें लगायें। अपने घरों दुकानों के आसपास सड़क पर जल छिड़काव करें। सरकार को भी सड़कों पर पानी का छिड़काव करने के लिये सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। ग़रीबों व आम लोगों के दान दक्षिणा से चलने वाले धर्मस्थलों को भी इस भयंकर गर्मी में अपनी दान पेटी का मुंह ऐसे रहत कार्यों के लिये खोलना चाहिये। अनावश्यक आग जलाने व धुआं फैलाने से भी परहेज़ करें। पेड़ काटने के बजाये वृक्ष लगाने के अभियान चलायें।

याद रखिये आज जिस भीषण गर्मी का सामना हमसबको करना पड़ रहा है उसकी ज़िम्मेदार प्रकृति नहीं बल्कि हम स्वयं हैं। विकास के नाम पर फैलते कंक्रीट के जंगल, औद्योगीकरण के नाम पर समाप्त होती हरियाली,बढ़ता शहरीकरण,सम्पन्नता के नाम पर बढ़ते वाहन व ए सी,जंगलों की होती अंधाधुंध कटाई आदि मानव जनित है। और यही ग्लोबल वार्मिंग का भी कारण है ,इसी के चलते ग्लेशियर भी पिघलने लगे हैं। गोया आने वाले वर्ष और भी भयंकर गर्मी व तपिश लाने वाले हैं। हम भारतीय लोग जो 40 डिग्री तापमान सहन नहीं कर पाते थे अब 50 डिग्री यानी अरब देशों में पड़ने वाली सामान्य गर्मी झेलने के लिये मजबूर हैं। धनाढ्य लोग जो गर्मी के मौसम में पहाड़ी क्षेत्रों में चले जाया करते थे उनकी बढ़ती संख्या ने वहां के मौसम को भी बदल दिया है। मिसाल के तौर पर शिमला व नैनीताल जैसे पर्वतीय पर्यटन स्थलों पर भी अब खूब गर्मी पड़ने लगी है। कारों की क़तारें ,ट्रैफ़िक जाम,असंख्य होटल,पार्किंग समस्या लगभग सभी पर्वतीय पर्यटन क्षेत्रों की नियति बनकर रह गयी है। ऐसे में प्रत्येक साधन संपन्न व धनाढ्य लोगों का कर्तव्य है कि वे इस आग बरसती भीषण गर्मी में जहाँ स्वयं वातावरण को और अधिक प्रदूषित करने से परहेज़ करने का प्रयास करें वहीँ मेहनतकश व कामगार लोगों पर तरस खायें और उन्हें यथा संभव सहयोग करें। यक़ीन जानिये आपकी थोड़ी सी सहायता व सहयोग से किसी कामगार,मज़दूर व जवान के दिल से निकली दुआ आपको न केवल पुण्य का भागीदार बनायेगी बल्कि आपकी आत्मा को भी तृप्त करेगी।

पंचायत के तीसरे सीज़न में रहस्य, रोमाँच और हास्य का तड़का

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

दो साल के लम्बे इन्तजार के बाद गत मंगलवार 28 मई को ओटीटी प्लेटफार्म अमेजन प्राइम वीडियो पर वेबसिरीज़ पंचायत - सीज़न तीन को रिलीज कर दिया गया । पंचायत - तीन की कहानी इस सिरीज़ के बाकी सीजन की तरह ही दमदार और मजेदार है। पंचायत-एक और पंचायत-दो की ही तरह पंचायत-तीन का भी निर्देशन एकदम सधा हुआ है । वेबसिरीज में रहस्य,रोमाँच और हास्य का बराबर तड़का लगाया गया है। रिंकी और सचिव जी की प्रेम कहानी को भीआगे बढ़ाया गया है। पंचायत तीन में इस बार खूनखराबा भी दिखाया है। इस सिरीज में दामादजी की वापसी कराई गई है। राजनीति और लड़ाई-झगड़े के बीच प्रधानजी के करीबी प्रहलाद उनका साथ छोड़ देते हैं,यह प्रसंग भी ध्यान खींचता है। पंचायत सीजन तीन कुल मिलाकर ऐसी वेब सिरीज है जिसमें कुछ बड़ा ढूँढने की जरूरत नहीं है? सीजन की कहानी बहुत तेज रफ्तार से आगे नहीं बढ़ती है, लेकिन जिंदगी से जुड़े अहम मुद्दों और बातों को आसानी से कह और समझा जाती है, जिनसे आज की भाग दौड़ की जिंदगी में हम अछूते रह जाते है ।

पंचायत का सीजन -दो काफी उदास मोड़ पर खत्म हुआ था. तो सीजन -तीन की शुरुआत भी उसी गमगीन माहौल में हुई है ।प्रह्लाद अपने बेटे की मौत के सदमे से उबर नहीं पाए हैं. सचिवजी का तबादला हो गया है. नए सचिव आ गए हैं । रिंकी सचिवजी से सम्पर्क साधने की कोशिश करती है लेकिन वह फोन नहीं उठाते । विधायक के दिल में बदले की आग सुलग रही है ? भूषण उर्फ बनराकस की राजनीतिक गतिविधियां बढ़ गई हैं और वह किसी ना किसी तरह से फुलेरा ग्राम पंचायत पर अपना कब्जा करना चाहता है । जिसके लिए वह कई चालें भी चल रहा है. लेकिन क्या यह चालें सफल होती हैं? वह किस हद तक गुजर जाता है? विधायक प्रधानजी से कैसे बदला लेता है? इन सारे सवालों के जवाब आपको पंचायत तीन में देखने को मिलेंगे ।

सीजन तीन में अभिनय की बात करें तो जितेंद्र कुमार सचिव के रोल में जमे हैं. नीना गुप्ता और रघुबीर यादव पहले की ही तरह पूरी क्षमता के साथ काम कर रहे हैं । प्रधान बनीं मँजू देवी पहले से ज्यादा एक्टिव हुई हैं., लेकिन इस सीजन में विधायक की भूमिका निभाने वाले पंकज झा ने सबसे जोरदार एक्टिंग की है उन्होंने विधायक की भूमिका को कुछ इस तरह निभाया है कि उन्हें देखकर गुस्सा भी आता है और फिर तरस भी आ जाता है। भूषण की भूमिका में दुर्गेश कुमार ने अच्छा काम किया है ।

समग्र रुप से पंचायत के पहले चार एपीसोड जहाँ उदास रस से सराबोर हैं और इंसान की जिंदगी की कई मजबूरियों और रंग को दिखाते हैं, वहीं पांचवें एपिसोड से प्रधानजी और उनकी टीम का ड्रामा शुरू हो जाता है और वो सब बातें नजर आने लगती हैं जो पंचायत के प्रशंसक चाहते हैं । यह सच है कि कहानी थोड़ी धीमी चलती है, लेकिन वेब सीरीज का आखिरी और आठवाँ एपीसोड सारी कमियों को पूरा कर जाता है ? सीधी सादी पंचायत अन्त आते-आते मिर्जापुर में तब्दील हो जाती है ? यही नहीं, आखिरी एपीसोड का अन्त जब देखेंगे तो हो सकता है आपको वर्ष 2021 के फेमस बागपत चाट युद्ध की यादें ताजा हो जाएं.।

पंचायत सचिव अभिषेक त्रिपाठी की भूमिका निभाने वाले जितेंद्रकुमार इस पूरी वेबसिरीज की जान हैं। पहले दो सीजन में जहाँ उन्होंने लोगों का दिल खुश कर दिया था, वहीं तीसरे सीजन में उन्होंने थोड़ा निराश किया है । पंचायत- एक और और पंचायत-दो के मुकाबले'पंचायत- तीन में वह फीके पड़ते नजर आए। पंचायत सचिव सहायक विकास का रोल प्ले करने वाले चंदन रॉय भी लोगों को एंटरटेन करने में कहीं न कहीं चूक गए। ऐसा इसलिए क्योंकि पहले दो सीजन में इनके संवाद और पंचलाइन काफी मजेदार थी, वहीं तीसरे सीजन में न तो इनके डायलॉग्स दमदार हैं और न ही इन तीनों ने कोई अच्छी पंचलाइन मारी है।

दर्शकों को 'पंचायत चार' का रहेगा इंतजार 'पंचायत सीजन तीन के पहले दो एपीसोड थोड़े उबाऊ लगते हैं। तीसरे एपिसोड से जैसे ही कहानी रफ्तार पकड़ती है तभी मजा आने लगता है। पहले सीजन में आपको हँसाया गया, दूसरे सीजन में आपको रुलाया गया, तीसरे सीजन में आपसी मतभेद, लड़ाई-झगड़ा और खूनखराबा तक दिखाया गया। 'पंचायत तीन' का अन्त एक बड़े सवाल के साथ होता है जिसके जवाब के लिए दर्शकों को चौथे सीजन का इन्तजार करना होगा।

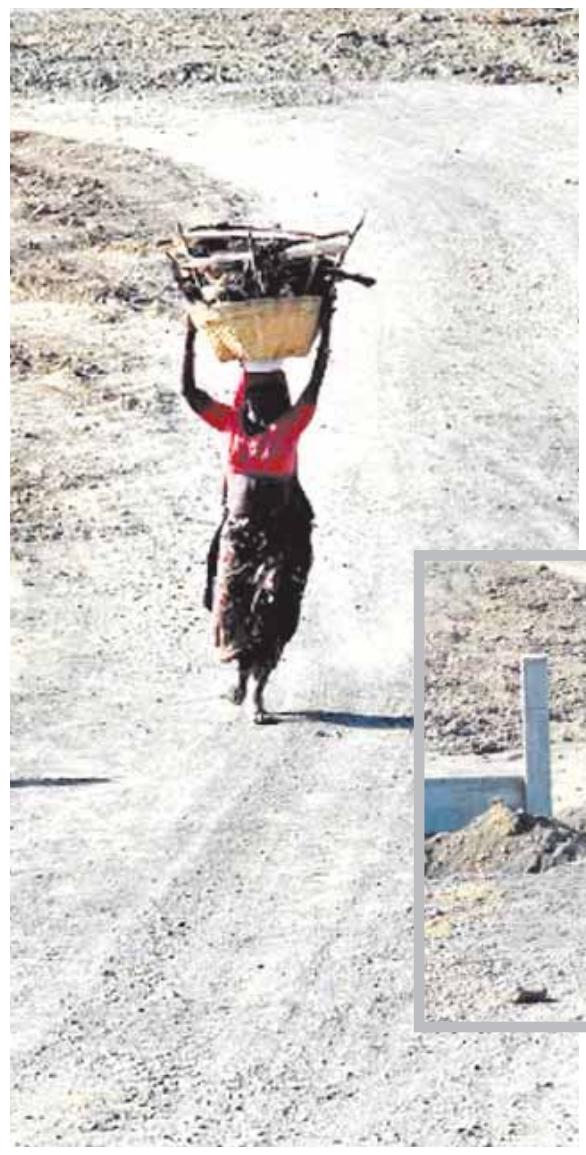

धरा की कंटीली, पथरीली व तपती राहों से गुजरता दो जून की रोटी के लिए मशक्कत भरा सफर ...!
फोटो - ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद (उज्जैन)

प्रकृति के अनुकूल जीवन जीने का अभ्यास नहीं किया तो भयावह संकट आयेगा: सांसद

प्रकृति को बचाने में सभी की भागीदारी जरूरी : विधायक

विवेकानंद वार्ड स्थित माचना घाट पर चलाया सफाई अभियान

बैतूल। माँ माचना जन्मोत्सव समिति बैतूल द्वारा सांई मंदिर स्थापना दिवस पर शनिवार को प्रातःबैतूल नगर के विवेकानंद वार्ड ग्रीन सिटी स्थित माचना घाट पर वृहद सफाई अभियान चलाया । इस दौरान सांसद डी.डी.उईके, बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल, विख्यात पर्यावरणविद, भारत भारती आवासीय विद्यालय के सचिव मोहन नागर, बैतूल नपाध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, पूर्व नपाध्यक्ष पार्षद आनंद प्रजापति सहित एक सैकड़ा लोगों नें माचना एनीकेट घाट सहित आसपास के क्षेत्र में लगभग दो घंटे तक सफाई की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद डी.डी.उईके नें माचना घाट सफाई अभियान की सराहना करते हुए कहा कि छोटा सा प्रयास क्रांति के रूप में बदल जाता है। साथ ही छोटे-छोटे प्रयासों से भयावह त्रासदी से मुक्ति मिल जाती है। उन्होनें कहा कि यह अभियान जल और प्रकृति के संरक्षण में मील का पत्थर साबित होगा। सांसद श्री उइके नें कहा कि यदि हमनें प्रकृति के अनुकूल जीवन जीने का अभ्यास नहीं किया, तो भयावह संकट आ सकता हैं। क्योंकि प्रकृति को हो रहे नुकसान से बढ़ते तापमान के कारण जल संकट बढ रहा है।

अगली पीढ़ी को सौपें हरा-भरा बैतूल - हेमंत खण्डेलवाल- बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें कहा कि प्रकृति को बचानें में सभी की भागीदारी जरूरी है। 50-100 साल पहले हर व्यक्ति प्रकति एवं पर्यावरण से प्रेम करता था। लेकिन भौतिकवाद के चलते बहुत बदलावा आया है। उन्होनें कहा कि माचना सफाई अभियान की तर्ज पर समय-समय पर सभी को प्रकृति के सरंक्षण में योगदान देना चाहिये। उन्होनें कहा कि प्रकृति को बचानें के लिए सभी के योगदान से हम हरा भरा और पानी से भरपूर बैतूल अगली पीढ़ी को सौप सकते है।

माचना के प्रति आत्मीयता से बढ़ेगा पानी- मोहन नागर

विख्यात पर्यावरणविद, शिक्षाविद मोहन नागर नें कहा कि माचना के प्रति बैतूलवासियों का लगाव और आत्मीयता जितनी बढेगी, माचना में भी उतना पानी बढ़ेगा। उन्होनें कहा कि जन जन में माचना के प्रति जुड़ाव और लगाव बढ़ा है। हम सभी के श्रमदान और पानी के प्रति संवेदना का सुपरिणाम है कि ग्रीष्मकाल में भी माचना में पानी रहता है। श्री नागर नें माचना की स्वच्छता, गहरीकरण और पौधारोपण के लिए समर्पित भाव से काम करनें के लिए जन जागृति लानें की अपील सभी से की। श्री नागर नें माचना नदी में नालों का गंदा पानी मिलनें पर चिंता जाहिर कर शासन-प्रशासन से माचना नदीं में मिलनें वाले नालों के पानी को साफ करने के लिए ट्रीटमेंट प्लांट लगानें की मांग की। कार्यक्रम के अंत में बैतूल नपा अध्यक्ष श्रीमति पार्वतीबाई बारस्कर नें आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व नपाध्यक्ष , पार्षद आनंद प्रजापति नें किया। कार्यक्रम में पूर्व पार्षद पिंटू महाले, पूर्व पार्षद बबलू मालवी, हिमांशु सोनी सहित बडी संख्या में वार्डवासी और पर्यावरण प्रेमी मौजूद रहे।

कांग्रेस नेता पूर्व वरिष्ठ पार्षद अजीज खां सपत्नीक हज को रवाना, सजातीय बन्धुओं, नेता दी मुबारकबाद

सुबह सवेरे सोहागपुर

कांग्रेस नेता पूर्व वरिष्ठ पार्षद अजीज खान सपत्नीक हज को रवाना हुए। उल्लेखनीय है कि अजीज खान पहलवान के नाम विख्यात हैं। इसी क्रम में किलापुरा से ही जनाब अब्दुल मजीद भाई भी सपत्नीक हज को जा रहे हैं। इसी तारतम्य में गांधी वार्ड से जनाब अब्दुल लतीफ साहब भी सपत्नीक हज को रवाना हुए। हज यात्रियों को जुलूस के माध्यम से सोहागपुर रेलवे स्टेशन पहुंचे। इस अवसर पर पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय,पार्षद जमील खान, पूर्व पार्षद मोहन कहार, ब्लाक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आलोक जायसवाल,नीरज चौधरी, माईकल खान, वकील कार्तिक शर्मा,अनोज जायसवाल,करीम खां, वकील अख्तर खान, खालिक चाचा, बशीर मैनेजर, वहीद भाई मेडिकल वाले, इलियास खान, हाजी गुड्डू पेटी वाले, बबलू भाई, इदरीश खान, शब्बीर खान, युसूफ भाई, आरिफ खान आदि सजातीय बन्धु उपस्थित थे। पार्षद जमील खान ने सुबह सवेरे संवाददाता को बताया कि तीनों महानुभाव सपत्नीक मुंबई से 3मई को हज के लिए रवाना होंगे। नर्मदापुरम जिले से 68 यात्री हज को जा रहे हैं।

राज्य शिक्षक संघ ने संभागीय दो सूत्रीय मांगों के संदर्भ में ज्ञापन सौंपा

सुबह सवेरे सोहागपुर

राज्य शिक्षक संघ संभाग नर्मदापुरम ने दो सूत्रीय मांगों को लेकर जे डी श्रीमति भावना दुबे को ज्ञापन सौपाकर विस्तृत चर्चा की । जिसमें राज्य शिक्षा सेवा संवर्ग में प्राथमिक,माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक शिक्षक संवर्ग की क्रमोन्नति सूची 12 वर्ष एवं 24 वर्ष पूर्ण होने पर क्रमोन्नति एवं वेतन मान का लाभ देते हुए अविलंब सूची जारी करने तथा इसी क्रम में भीषण गर्मी को दृष्टिगत रखते हुए शासन स्तर से शाला खुलने की तिथि परिवर्तन की बात रखी। श्रीमति दुबे मेम ने त्वरित हल कराने की बात कही। उक्त आश्य की जानकारी जिला अध्यक्ष उमेश ठाकुर ग्राम करनपुर ने सुबह सवेरे संवाददाता को दी।इस अवसर पर जिला हरदा एवं नर्मदापुरम के प्रदेश महासचिव करतारसिंह राजपूत, प्रदेश सचिव हरगोबिंद दुबे, प्रदेश सचिव गजेन्द्र बछ्ले, नर्मदापुरम जिलाध्यक्ष उमेश ठाकुर,हरदा जिलाध्यक्ष रामनिवास जाट,संतोष मालवीय,शिवदुवेदी,रामकृष्ण गौर,शिवकाशिव, वसन्त शर्मा,अनिल पगारे,अनिल शुक्ला,रमेशचंद्र विश्नोई,ओ पी वर्मा,नीतराज चंदेल,उमेश गुर्जर, मंगेस राजवेध,नेमीचंद विश्नोई,रमेश मिश्रा,आदि उपस्थित थे।

न कर्मचारियों को बख्श रहीं ना जनप्रतिनिधि के रिश्तेदारों को..

नर्मदापुरम। महिला डिप्टी डायरेक्टर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व द्वारा बागड़ा के बफर जोन में बिना इजाजत घूम रहे जन प्रतिनिधि के रिस्तेदारो पर कड़ी कार्यवाही कर उन पर आर्थिक दंड आरोपित किया है। घटना 30 मई की बताई जाती है। जिसमें पूर्व विधायक के भतीजे अनुराग दीवान सहित अन्य तीन लोग शामिल हैं। जिन्हें डिप्टी डायरेक्टर ने गाड़ी से बफर जोन में दिखाई पड़ने पर जनप्रतिनिधि के रिस्तेदारो को न केवल घंटों बैठा रखकर प्रताड़ित किया आर्थिक जुर्माना भी विभागीय नियमों के तहत दंडित किया, डिप्टी डायरेक्टर की इस कार्रवाई की प्रशंसा की जाएं अथवा उनकी कार्यशैली को यहां प्रश्नवाचक कहा जाए, क्योंकि डिप्टी डायरेक्टर एक ओर राजनैतिक दवाब को ठुकराकर संदर्भित मामले में पर्यटन नियमों के अनुसार अर्थ दंड से जनप्रतिनिधि के रिस्तेदारो दंडित किया गया पर पिछले 3 माह से अपने ही विभाग के छोटे कर्मचारी जिसमें चौकीदारों ड्राइवरों आदि के वेतन न देने, अग्नि सुरक्षा कार्यो भवन निर्माण भुगतान नहीं करने इसके अलावा अन्य विभागीय कार्यो का भुगतान नहीं कर मानसिक और आर्थिक परेशानी दे रहे हैं। कर्मचारी इसे लेकर अचंभित हैं साथ ही अप्रसन्न जो अब आगे कार्य करने में असमंजस की स्थिति में हैं। मजेदार बात तो यह है कि फील्ड डायरेक्टर का कहना तक डिप्टी डायरेक्टर सुनने मानने को तैयार नहीं।

मरने के बाद जिंदा रहेंगी श्रीमती इंदूमती की आंखें

बैतूल। जिंदगी की गाड़ी का पहिया तो सभी खींचते हैं लेकिन चुनिंदा होते हैं वह इंसान जो इतिहास बनाया करते हैं। आज हम एक ऐसी ही शख्सियत श्रीमती इंदूमती जैन की बात कर रहे हैं जो कि भले ही अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन उसकी आंखें जिंदा रहेंगी और वह इन आंखों से मरणोपरांत भी दुनिया देखेंगी। श्रीमती जैन ने अपनी आंखें दान कर दी है। इन आंखों को भोपाल ले जाया गया। शनिवार सुबह महावीर मिष्ठान भण्डार के संचालक राजेश, भरत जैन की माताजी श्रीमती इंदूमती पति स्व. जगदीशचंद जैन (84) का निधन हो गया था। मृत्यु पूर्व उन्होंने अपने परिवार में नेत्रदान की इच्छा जाहिर की थी। उनके निधन के बाद परिजनों ने रेडक्रास सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. अरूण जयसिंहपुरे से संपर्क किया और अपनी माताजी की इच्छा से अगवत कराया। इसके पश्चात नेत्रदान की प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए उनकी पार्थिवदेह जिला अस्पताल लायी गई और आपरेशन कर उनकी दोनों आंखें निकाली गई और इन्हें सुरक्षित रूप से हमीदिया भोपाल के आई बैंक भेजा गया।

नेत्रदान की प्रक्रिया संपन्न करने वाले नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर वरुन उपाध्याय ने बताया कि नेत्रदान के लिए सबसे पहले आईबाल और कार्निया निकाला गया। इसके साथ ही ब्लड सेम्पल लिया गया और कार्निया सेम्पल भी लिया। इन्हें भोपाल भेजा गया है। आंखें निकालने के लिए किए गए आपरेशन के दौरान नेत्र विशेषज्ञ डॉ. विनोद बर्डे, डॉ. साबिया, डॉ. अंजुम, गीता सिस्टर, परते सिस्टर सहित अन्य स्टाफ मौजूद था जिनके सहयोग से आपरेशन संपन्न कराया गया। डॉ. उपाध्याय ने बताया कि श्रीमती इंदूमती जैन की कार्निया की कंडीशन बेहतर थी और जिनकी आंखों की रोशनी चली जाती है उनके यह काम आ सकती है।

रेडक्रास सोसायटी के डॉ. अरूण जयसिंहपुरे ने बताया कि श्रीमती इंदूमती जैन का नेत्रदान हुआ है। यह पांचवा नेत्रदान था। इसके पहले एकनाथ कवडकर, ज्ञानराव गाड़वे, शेषराव पंवार सहित एक अन्य शामिल है। उन्होंने बताया कि रेडक्रास सोसायटी के चेयरमेन कलेक्टर के मार्गदर्शन में सोसायटी के द्वारा अंगदान और देहदान के लिए सतत जनजाग्रति अभियान चलाया जा रहा है। इसी के चलते अभी तक अंगदान के 550 फार्म भरे गए हैं और देहदान 250 फार्म भरे गए हैं जिन्होंने मरोणोपरांत देहदान की इच्छा व्यक्त की है। उन्होंने बताया कि जागरूकता अभियान के चलते देहदान और अंगदान की इच्छा व्यक्त करने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। समाजसेवी सतीष पारीख ने बताया कि राजेश और भरत जैन की माताजी श्रीमती इंदूमती जैन काफी धार्मिक प्रवृत्ति की थी और दानी प्रवृत्ति की भी थीं। हमेशा दानपुण्य के कार्यों में अग्रणी रहती थीं। उन्होंने अपने जीवित रहते नेत्रदान की इच्छा व्यक्त की थी। उनकी इच्छा पूरी करने के लिए उनके परिजनों ने निधन के तत्काल पश्चात ही उनके नेत्रदान की प्रक्रिया करवाई। उनके निधन पर परिजनों, स्वजातीय बंधुओं, रिश्तेदारों और शुभचिंतकों ने जहां शोक संवेदनाएं व्यक्त की है वहीं नेत्रदान को लेकर एक पुण्य कार्य भी बताया है। इससे साफ है कि श्रीमती इंदूमती जैन भले ही अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन उनकी आंखें जिंदा रहेंगी।

जिला राजपूत समाज द्वारा महाराणा प्रताप जयंती महोत्सव एवं 42 वां विशाल राजपूत सम्मेलन आयोजित

धार। जिला राजपूत समाज द्वारा महाराणा प्रताप जयंती महोत्सव एवं 42 वा विशाल राजपूत सम्मेलन मनाया गया । इस अवसर पर धार जिले के राजपूत सरदार कार्यक्रम में सम्मिलित हुए । आयोजन के एक दिवस पूर्व रैली युवाओं द्वारा निकाली गई । जो राजपूत धर्मशाला से शहर के प्रमुख मार्गो से होकर राजपूत धर्मशाला पर रैली समापन हुआ ।

महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर मुख्य अतिथि 1008 डॉक्टर नरसिंह दास मांडव महंत थे। उनका स्वागत राजपूत समाज जिला धार के अध्यक्ष निर्भय सिंह बकसाना, श्री समंदर सिंह पटेल उटावद व जिले के पदाधिकारियों ने किया । मांडव महंत ने राजपूत समाज की एकता व उनके त्याग के बारे में बताया । आपने बताया कि आप लोगों ने जिस समाज में जन्म लिया है वह समाज अपने त्याग, धर्म के प्रति समर्पण और विश्वास के लिए जाना जाता है । भगवान राम ने भी इसीलिए इसको चुना और हर वर्ग का सम्मान कर, उसको आगे बढ़ाएं यही विशेषता महाराणा प्रताप में भी थी !उन्होंने भी सभी वर्गों का पूर्ण सम्मान किया और उनका विश्वास हासिल कर अपना परचम फहराया । जो आज की पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी के लिए भी एक मिशाल है और गौरव की बात है। उन्होंने समाज जन को संबोधित करते हुए यही अपेक्षा की है कि समाज, धर्म और सनातन आगे बढ़ाने के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों का अनुसरण कर , सर्वहारावर्ग के कल्याण के कार्य करते रहेंगे। इसके पश्चात स्वर्गीय जसवंत सिंह राठौर को समाज रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया । सम्मान पत्र का वाचन उत्सव समिति के अध्यक्ष लाखन सिंह देदला द्वारा किया गया । यह सम्मान पत्र उनके पुत्र विजय सिंह राठौर को प्रदान किया गया ।

सम्मान की श्रृंखला में जिला धार के पुलिस अधीक्षक मनोज सिंह ,साइबर ब्रांच प्रभारी भेरूसिंह देवड़ा , डॉक्टर त्वरित सिंह ठाकुर , जयंती सिंह ठाकुर नेत्र विशेषज्ञ , कनिष्क सिंह देवड़ा को फुटबॉल टीम में चयन होने पर, अरदिम सिंह राजावत को कराते, कुमारी उन्नति तंवर एवं नीरज सिंह चौहान को कक्षा 12वीं में 90त्न से अधिक अंक प्राप्त होने पर राजपूत गौरव की उपाधि से अलंकृत कर प्रतीक चिन्ह भेंट किए गए।

इस अवसर पर समाज के प्रमुख जिला राजपूत समाज के अध्यक्ष निर्भय सिंह पटेल बक्साना , समंदर सिंह पटेल उटावद, मोहन सिंह परिहार, लाखन सिंह, सिसोदिया, रमेश सिंह सिसोदिया भारत सिंह मंडलोई डॉ कमल सिंह चौहान डॉ आरसीएस ठाकुर, दशरथ सिंह पटेल, मलखान सिंह मोरी ,धर्मेंद्र सिंह जवरा , महेंद्र सिंह सुनेर,कमलेश्वर सिंह सिसोदिया ,आलोक सिंह राठौर नारायण सिंह पटेल ,घनश्याम सिंह सोलंकी, हेम सिंह पटेल , घनश्याम सिंह निकम, विजय सिंह राठौर,आशीष सिंह परिहार, संजय सिंह सोलंकी ,पुष्पेंद्र सिंह चौहान, योगेश सिंह चौहान, विजय सिंह सिसोदिया, आदि समाज जन उपस्थित रहे। संचालन राजेंद्र सिंह चौहान द्वारा किया गया । आभार नवीन सिंह चौहान द्वारा व्यक्त किया गया

700 से अधिक प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

यह आपके और आपके माता-पिता गुरुजनों के खून- पसीने का सम्मान है- आचार्य सोमेश परसाई

नर्मदापुरम। कौशल श्री विकास समिति के द्वारा जिले का वृहद प्रतिभा सम्मान दो चरणों में आयोजित किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य सोमेश परसाई ने कहा कि यह आपके सम्मान के साथ-साथ आपके माता-पिता और शिक्षक के खून पसीने का सम्मान भी है उन्होंने कहा कि यह जिले का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जो इतने बड़े स्तर पर आयोजित किया जाता है, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही राज्यसभा सांसद माया नारोलिया ने कहा ऐसे आयोजन से प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलता है। समिति के अजय सैनी एवं सतीश बिल्लौरे ने जानकारी देते हुए बताया कि यह कार्यक्रम विगत 9 वर्षों से आयोजित किया जा रहा है इस बार संस्था के द्वारा 700 से अधिक जिले के विद्यार्थी एवं उनके स्कूल संचालक, शिक्षक के साथ सामाजिक संस्थाओं का भी सम्मानित किया, कार्यक्रम में दर्शन सिंह चौधरी, विधायक डॉ. सीताशरण शर्मा, सोहागपुर विधायक विजयपाल सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव, वरिष्ठ चिकित्सा डॉ.अतुल सेठा, गिरजा शंकर शर्मा, विकल्प डेरिया, अर्जुन मालवीय, डी.एस दांगी , मुन्नालाल जैन, धर्मेंद्र तिवारी हुझेफा वोहरा, विकास नारोलिया रहे। इस मौके पर एलएनसीटी ग्रुप से पंकज जैन और ऊर्जा ग्रुप से चेतन रैकवार ने बच्चे और अभिभावक का कैरियर संबंधी मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावक शिक्षक और सामाजिक संस्थाएं मौजूद रही। कार्यक्रम का संचालन भूपेश थापक और रोहन जैन ने किया एवं आभार अजय सैनी व्यक्त किया।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने सावित्री ठाकुर का जन्मदिन मनाकर यशस्वी जीवन की कामना की

धार। भारतीय जनता पार्टी धार नगर द्वारा भाजपा नेत्री पूर्व सांसद व लोकसभा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर का जन्मदिन शनिवार को जिला भाजपा कार्यालय पर कार्यकर्ताओं ने धूमधाम से मनाया गया । भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका अभिनंदन कर उनके यशस्वी और दीर्घायु जीवन की कामना की ।

पूर्व सांसद सावित्री ठाकुर ने सुबह धामनोद के बालाजी मंदिर, सुन्द्रेल फाटा स्थित हनुमान मंदिर, खलघाट में शिव मंदिर तथा माँ नर्मदा जी के दर्शन एवं पुजा - पाठ पश्चात् मुक्तानंद परिसर धामनोद गार्डन में पौधारोपण पश्चात गौ-सेवा कर भाजपा जिला कार्यालय में कार्यकर्ताओं के बीच धूमधाम से जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोंदिया, जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे, धार नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर, पूर्व नगराध्यक्ष अनिल जैन बाबा, जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, दीपक शर्मा, विवेक गौड, मनीष प्रधान, नगर महामंत्री राजेश डाबी, पुरुषोत्तम चौहान, सनी होड़ा, अनिल गहलोत, विकास शर्मा खरसोरड़ा,सोनिया राठौर, राजेंद्र राठौड़, कैलाश पिपलोदिया, प्रभात कुमार गुप्ता भय्यूराम अजय राठौर, नितिन चौहान, विकास शर्मा, देवांग पंवार, गौरव जाट हरीश रघुवंशी, कुंदन भूरिया, अभय वसुनिया, आकाश वर्मा, जितेंद्र पांडे हरीश आर्य, विशाल राठौर, जगदीश सोनी कमलेश बिजवा, महेश कदम, घनश्याम सोलंकी आदि भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

कलम क्रांति के साथ रक्त क्रांति की अलख जगा रहे संदीप सोलंकी

बैतूल। शनिवार जिला रक्तकोष में सिलापटी शाहपुर के रहने वाले शैलेंद्र चौरे को अति आवश्यकता होने पर जब ओ पॉजिटिव रक्त के लिए परिजन घबरा गए और नम आंखों से इधर उधर रक्त के लिए परेशान होने लगे तो ऐसे में एक संदेश पर कलम के सिपाही पत्रकार व मां शारदा साहयता समिति के मीडिया अधिकारी संदीप सोलंकी ने इतनी भीषण गर्मी में 16 वी बार ओ पॉजिटिव रक्त का दान किया। सोलंकी कई आकस्मिक दुर्गतानाओ वाले केस में भी रक्तदान कर चुके है। उनका कहना है कि मेरे रक्त की चंद बुंदो से किसी का जीवन बचता है तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

सेवानिवृत्त पर नगरपालिका के द्वारा चालीस वर्ष कि नौकरी में चार पैसे का भुगतान नहीं किया ..!

नर्मदापुरम । भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध नगरपालिका कर्मचारी मजदूर संघ के कार्यकारी अध्यक्ष महेश वर्मा ने बताया है कि नगरपालिका के पीडब्ल्यूडी विभाग नेहरू पार्क में दैनिक वेतनभोगी से विनियमित करण यानि स्थाई कर्मी के रूप में एक दिन पहले सेवानिवृत्त हुए कर्मचारी सूबेदार जी ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण चालीस वर्ष नगरपालिका में अपनी सेवाएं दी हैं परंतु नगरपालिका के द्वारा उनको माह मई के मासिक वेतन का भुगतान, एनपीएस राशि का भुगतान, उपादान राशि का भुगतान, सरकार अंशदान राशि का भुगतान कुछ भी नहीं दिया गया बस स्थापना शाखा के द्वारा एक कागज पकड़ा दिया गया कि आज दिनांक में आपको सेवानिवृत्त किया जाता है नगरपालिका कि सीएमओ, अध्यक्ष, कार्यालय अधीक्षक, स्थापना शाखा या अन्य किसी जिम्मेदार व्यक्ति ने यह उचित नहीं समझा कि सेवानिवृत्त श्री सूबेदार को हार फूल पहनाकर उनको ढांढस बंधाते स्वागत करते परंतु मजदूर संघ ने अपने दायित्व का निर्वाहन करके उनका स्वागत सत्कार करते उनके निवास तक विदाई दी। नगरपालिका कि एनपीएस शाखा सहायक राजस्व निरीक्षक कर्मचारी के हवाले हैं राजस्व वसूली के कारण वह अपने कर्तव्य का निर्वाहन ठीक से नहीं कर पा रहे हैं पिछले कई वर्षों से बाबू विहीन इस शाखा में सेवानिवृत्त पर देयक एनपीएस फंड का भुगतान प्राप्त नहीं हो पाता है छै माह पूर्व स्थानांतरण से संबंधित दस्तावेज देने के बाद कर्मचारी के पक्ष में मासिक वेतन, एनपीएस, उपादान राशि, सरकार अंशदान राशि का भुगतान नहीं किया गया उसके लिए नगरपालिका कि स्थापना शाखा, एनपीएस शाखा, लेखा शाखा पूर्णतः जिम्मेदार हैं ट्रिपल इंजन कि सरकार वाली नगरपालिका में सेवानिवृत्त पर आर्थिक शोषण के साथ विदाई दी जा रही है इसके लिए नजदीकी से जुड़े सभी जनप्रतिनिधि भी आर्थिक शोषण के लिए भागी हैं । आगामी समय में ऐसी पुनरावृत्ति न हो नगरपालिका अध्यक्ष, सीएमओ, जिम्मेदार जन प्रतिनिधि से मजदूर संघ अपेक्षा करता है कि इस संबंध में पूर्ण ध्यान दिया जावे एनपीएस फंड शाखा में कुशल बाबू कि पद स्थापना कि जावे सेवानिवृत्त कि बेला पर मजदूर संघ के पूर्व अध्यक्ष नगरपालिका के पार्षद राजेन्द्र उपाध्याय, महेश वर्मा, ओपी रावत, दाताराम सगर, मूर्ति सिंह राजपूत, दिलावर बेग, इत्यादि उपस्थित थे।

सनी देओल पर धोखाधड़ी और झूठ बोलने का आरोप

साल 2023 में बॉलीवुड स्टार सनी देओल ने फिल्म 'गदर-2' से धांसू कमबैक किया था। सनी देओल की इस मूवी ने बॉक्स ऑफिस पर ऐसी कमाई की थी कि लोगों के होश उड़ गए थे। सनी की फिल्म गदर-2 ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। इस मूवी के बाद सनी देओल की झोली में कई फिल्में गिर गई। इस लिस्ट में बॉर्डर-2 समेत कई मूवीज के नाम शामिल हैं। इस बीच सनी देओल मुश्किलों में फंसते नजर आ रहे हैं। सनी को लेकर एक रिपोर्ट सामने आई, जिसमें ये बताया गया है कि एक्टर ने एक फिल्म मेकर के साथ धोखा किया है। सनी देओल पर फिल्ममेकर ने क्या आरोप लगाया है।

सनी से जुड़ी एक खबर ने इंटरनेट पर हलचल बढ़ा दी। दरअसल, फिल्ममेकर सौरव गुप्ता ने सनी देओल ने हमला बोल दिया है। सौरव गुप्ता ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए सनी देओल पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने सनी पर धोखा देने और झूठ बोलने का आरोप लगाया है। सौरव गुप्ता ने बताया कि साल 2016 में सनी देओल ने एक मूवी साइन की थी, जिसके लिए उन्होंने 4 करोड़ रुपए मांगे थे। हमने सनी देओल को 1 करोड़ पहले ही दे दिए थे। पैसे लेने के बाद सनी देओल दूसरी मूवी 'पोस्टर बॉयज' की शूटिंग करने लगे। इस दौरान वो हम लोगों से और पैसे मांगते रहे। अभी तक उनके अकाउंट में हमारी तरफ से 2.55 करोड़ रुपए भेजे जा चुके हैं।

फिल्ममेकर सौरव गुप्ता ने ये कहा है कि सनी देओल ने अपनी फीस अचानक से बढ़ा दी थी। सौरव गुप्ता ने कहा 'गदर 2 के हिट होने के बाद साल 2023 में हमने सनी देओल के साथ एग्रीमेंट पढ़ा तो हम दंग रह गए। उसमें एक पन्ना ही पूरी तरह से बदल दिया गया था। जहां पहले सनी देओल ने 4 करोड़ रुपये मांगे थे। वहीं अब सनी देओल ने इसे बढ़ाकर 8 करोड़ कर दिया है।'

सलमान नहीं अनिल कपूर होस्ट करेंगे ये शो

रियलिटी शो बिग बॉस ओटीटी-3 सुर्खियों में है। इस शो को लेकर आए दिन कोई न कोई नया अपडेट सामने आ रहा है। बिग बॉस ओटीटी 3 के मेकर्स शो के लिए कई टीवी और सोशल मीडिया स्टार्स को अप्रोच कर रहे हैं। बिग बॉस ओटीटी 3 का ऑफिशियल टीजर सामने आ गया, जिसे देख लोग गदगद हो गए हैं। इस टीजर को देखने के बाद कुछ लोग ये अनुमान लगा रहे हैं कि 'बिग बॉस' ओटीटी 3 में सलमान खान की जगह अनिल कपूर होस्ट की भूमिका में नजर आएगा।

टीवी न्यूज़ में बिग बॉस ओटीटी 3 का नया टीजर छा गया है। इस टीजर में पहले तो अभिषेक मल्हान और अविनाश सचदेव के बीच हुए लड़ाई को दिखाया गया। इसको लेकर बिग बॉस ने कहा ये फाइट भूल जाओगे। इसके बाद रुबीना दिलैक की लव स्टोरी दिखाई गई। इसपर भी बिग बॉस ने कहा ये भी भूल जाएंगे, क्योंकि अगला सीजन एकदम झक्कास होने वाला है। इस एक लाइन से लोग ये कयास लगा रहे हैं कि इस बार अनिल कपूर बतौर होस्ट दिखाई देंगे। सोशल मीडिया पर इस बात पर खूब चर्चा हैं। लोगों का ये मानना है कि सलमान खान से अच्छा होस्ट कोई और है ही नहीं!

बिग बॉस ओटीटी 3 अगले महीने जून में ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो सिनेमा पर दस्तक देगा। इस शो के पहले सीजन को करण जौहर ने होस्ट किया था। वहीं दूसरे में सलमान खान बतौर होस्ट नजर आए थे। बता दें कि बिग बॉस ओटीटी 2 को फेमस यूट्यूबर एल्विश यादव ने अपने नाम कर लिया था। वहीं शो के रनर अप अभिषेक मल्हान थे।

'सिकंदर' में सलमान से भिड़ेंगे 'बाहुबली' के 'कटप्पा'

सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' का ऐलान होने के बाद लोगों में उत्सुकता हैं। इस फिल्म को लेकर रिपोर्ट में बताया जा रहा है कि 'बाहुबली' के 'कटप्पा' यानी एक्टर सत्यराज की एंट्री हो गई। अनन्या पांडे की पहली वेब सीरीज 'कॉल मी बे' की रिलीज डेट आउट हो गई है। वेब सीरीज 6 सितंबर को प्राइम वीडियो पर रिलीज की जाएगी। एआर मुरुगदास के डायरेक्शन में बनने वाली फिल्म 'सिकंदर' साल 2025 की ईद पर रिलीज होगी। अब इस फिल्म को लेकर रिपोर्ट में बताया जा रहा है कि 'बाहुबली' के 'कटप्पा' यानी एक्टर सत्यराज की एंट्री हो गई। सत्यराज फिल्म' सिकंदर' में विलेन का रोल करेंगे और सलमान खान को टक्कर देते दिखेंगे।

अनन्या पांडे की वेब सीरीज 'कॉल मी बे' जब से अनाउंस हुई तब से चर्चा बनी हुई है। अनन्या पांडे की पहली वेब सीरीज की रिलीज डेट आउट हो गई है। अनन्या पांडे की वेब सीरीज 'कॉल मी बे' 6 सितंबर को ओटीटी प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो पर रिलीज की जाएगी। मेकर्स ने सोमवार को एक पोस्ट शेयर करते हुए इसकी जानकारी दी है। वेब सीरीज 'कॉल मी बे' में अनन्या पांडे के अलावा कई अन्य स्टार्स भी नजर आने वाले हैं।

रियल बॉक्स

'पानी' पर कोई फिल्म बनाना क्यों नहीं चाहता!

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

सिनेमा किसी भी मुद्दे को प्रभावी ढंग से लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का सबसे सशक्त माध्यम है। लोग इसे परदे पर देखकर उससे सीधे जुड़ते हैं और इसका सीधा असर उनके जहन पर पड़ता है। देखा जाए तो सामाजिक मुद्दों को लेकर बॉलीवुड शुरू से ही सजग रहा है। फिल्मों के शुरुआती काल से 80 के दशक तक सामाजिक मुद्दों पर कई गंभीर फिल्में बनी। राज कपूर, ख्वाजा अहमद अब्बास, रित्विक घटक और उसके बाद श्याम बेनेगल जैसे विख्यात फिल्मकारों ने अपनी कई फिल्मों का ताना-बाना सामाजिक मुद्दों से ही चुना! मगर 80 के दशक के बाद ऐसे कई मुद्दे हाशिए पर चले गए। सामाजिक मुद्दों पर फिल्में बननी कम हो गई, यही कारण है कि पानी की किल्लत पर भी फ़िल्में नहीं बनी। आज जब देश के सामने पानी की समस्या विकराल रूप ले रही है, कोई भी फिल्मकार इस विषय पर फिल्म बनाने का जोखिम उठाने को तैयार नहीं! शायद इसलिए कि इसे फ्लॉप आइडिया माना जाता है।

1971 में ख्वाजा अहमद अब्बास ने पानी से जुड़ी फिल्म 'दो बूंद पानी' बनाई थी। यह फिल्म राजस्थान में बन रहे गंगा सागर कनाल प्रोजेक्ट की पृष्ठभूमि में आधारित थी। इसमें अपना योगदान देने के लिए एक सूखाग्रस्त गांव से नायक जलाल आगा अपना परिवार छोड़कर आ जाता है कि यह प्रोजेक्ट राजस्थान के रेगिस्तान की तकदीर बदल देगा। कनाल प्रोजेक्ट तैयार हो जाता है, राजस्थान को पानी मिल जाता है, पर नायक को समाज के कारण अपना परिवार खोना पड़ता है। इस फिल्म को राष्ट्रीय अखंडता के लिए पुरस्कार भी मिला। लेकिन, 1971 के बाद से फिर पानी की समस्या पर कोई फिल्म नहीं बनी! आमिर खान ने 2001 में 'लगान' जरूर बनाई! लेकिन, ये बारिश की कमी से किसानों को होने वाली परेशानी और अंग्रेज सरकार द्वारा वसूले जाने वाले लगान पर आधारित थी। अपने सशक्त कथानक के कारण फिल्म हिट रही, पर इसमें जल संकट जैसा मुद्दा दब गया। 2013 और 2014 में पानी के मुद्दे पर 'कौन कितने पानी में' और 'जल' जरूर आई थी। 'जल' को कच्छ के रण में फिल्माया गया था। ये बक्का नाम के एक ऐसे युवक की कहानी थी, जिसके पास दैवीय शक्ति है। इसके दम पर वो रेगिस्तान में भी पानी खोज सकता है। इस फिल्म को विदेशी भाषा की ऑस्कर अवॉर्ड फिल्मों में भारत की तरफ से भेजा भी गया था। 2005 में दीपा मेहता ने 'वाटर' नाम फिल्म जरूर बनाई, पर इसका पानी वास्ता नहीं था। यह फिल्म 1938 में स्थापित वाराणसी में एक आश्रम में विधवाओं के जीवन पर बनी थी।

शेखर कपूर ने 2010 के कान्स फिल्म समारोह में 'पानी' बनाने का ऐलान किया था। 'पानी' की थीम काफी हटकर है। इसमें भविष्य के ऐसे दौर की कल्पना की गई है, जहां पानी पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कब्जा है और आम लोग इसकी एक-एक बूंद के लिए संघर्ष कर रहे हैं। तब यह बात सामने आई थी कि 'स्लमडॉग मिलिनेयर' के निर्देशक डैनी बॉयल 'पानी' से बतौर निर्माता जुड़ेंगे। ऋतिक रोशन मुख्य भूमिका में होंगे और संगीत एआर रहमान देंगे। फिर 2013 में सुनने में आया कि यह फिल्म 'यशराज फिल्म्स' के बैनर पर बनेगी और सुशांत सिंह अहम किरदार में होंगे। इसके बाद ये आइडिया आता-जाता रहा, पर 'पानी' पर फिल्म नहीं बन सकी। 2013 में शेखर कपूर ने इस प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया, जिसमें अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत लीड रोल में नजर आने वाले थे। पर, कुछ वजहों से ये प्रोजेक्ट बंद कर दिया गया। कहा जाता है कि इस प्रोजेक्ट के बंद होने से सुशांत बुरी तरह टूट से गए थे।

फिल्म का मूल भाव है कि जब कुआं सूख जाएगा, तब हम पानी की कीमत समझेंगे? इस फिल्म की कहानी 2040 के कालखंड जोड़कर बुनी गई है, जब मुंबई के एक क्षेत्र में पानी नहीं होता और दूसरे में पानी होता है। ऐसे में पानी के लिए जंग छिड़ती है। इसी जंग में प्रेम पनपता है। फिल्म में सुशांत सिंह राजपूत, आयशा कपूर और अनुष्का शर्मा को लिया गया था। इसका पोस्टर भी जारी हुआ, जिसमें एक आदमी मुंह में घड़ा लगाए दिखाया गया, लेकिन घड़े में एक बूँद भी पानी नहीं होता! शेखर कपूर ने अपने इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट के बारे में एक इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने इसे एक 'आध्यात्मिक कहानी' के साथ एक 'ड्रामेटिक स्क्रिप्ट' करार देते हुए कहा था कि 'पानी' की कहानी एक लव स्टोरी के साथ कई रिश्तों के बारे में है। पानी की समस्या पर बनी एक फिल्म है 'कड़वी हवा' जिसकी कहानी दो ज्वलंत मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती है। एक है जलवायु में बदलाव के कारण बढ़ता जलस्तर और सूखे की समस्या! फिल्म में सूखाग्रस्त बुंदेलखंड दिखाया गया है। सूखे की समस्या के कारण यहां के किसान कर्ज में डूबे हैं। किसानों की बेबसी और सूखी जमीन की हकीकत दिखाती फिल्म 'कड़वी हवा' में संजय मिश्रा ने बेहतरीन अभिनय किया है। ऐसी ही एक फिल्म 'कौन कितने पानी में' दो गांवों 'ऊपरी' और 'बैरी' की कहानी है। ऊपरी गाँव ऊंची जाति वालों का है और बैरी गाँव में पिछड़ी जाति के लोग रहते हैं। लेकिन, वे जागरूक हैं और पानी को सहेजते हैं। एक ऐसा समय आता है, जब ऊंची जाति वालों के गाँव में पानी की किल्लत आती है। जबकि, पिछड़ी जाति वालों के गाँव में पानी बहुलता से रहता है। इस पानी के लिए ऊंची जाति वाले बैरी गाँव से छल करके पानी जुगाड़ लेते हैं। फिल्म का निष्कर्ष है कि यदि पानी को सहेजा नहीं गया तो इस किल्लत से हमें निपटना पड़ेगा। देखा गया है कि पानी की सबसे ज्यादा किल्लत गरीबों को ही चुकानी पड़ती है। अमीर तो पानी खरीदकर पी लेते हैं, लेकिन गरीब पानी खरीदकर किसे पिएं! पानी की किल्लत पर कई डॉक्यूमेंट्री भी बन चुकी है। इनमें से एक है 'थर्स्टी सिटी।' 2013 में बनी इस फिल्म में दिल्ली में पानी की किल्लत और पानी के लिए श्रमिकों के संघर्ष को कैमरे में कैद किया गया है। पानी की किल्लत पर फ़िल्में बनाने वाले निर्देशकों को इस पर काम करने का विचार तब आया, जब उन्होंने अपनी आँखों से इस समस्या को देखा और महसूस किया!

मानव अस्तित्व से जुड़ी इस गंभीर समस्या को समझते हुए शेखर कपूर फिल्म बनाने का साहस कर रहे हैं, यह अच्छी बात है। इससे यह उम्मीद तो की ही जानी चाहिए कि संगीन विषयों पर सार्थक फिल्में बनाने वाले दूसरे निर्देशक भी आगे आएंगे। वे पानी की समस्या को रूपहले पर्दे पर उकेरकर पानी का कर्ज उतारेंगे और अपना सामाजिक दायित्व पूरा करेंगे। देव आनंद की बहुचर्चित फिल्म 'गाइड' और आमिर खान की 'लगान' में जब परदे पर पानी की बूंदे आसमान से बरसती हैं तो खुशी से सिर्फ पात्र ही उल्लसित नहीं होते, दर्शकों के मन में भी पानी की जीवनदायिनी अहमियत का अहसास होता है। किंतु, जब परदे से गांव ही गायब हो गए, तो भला खेत और पानी की बूंदों की अहमियत ही कहां बची! फिल्म 'अनोखी रात' का गीत ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में, सागर मिले कौन से जल में' हमारे जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करता लगता है। फिल्म ही नहीं, गीतों में भी पानी की चर्चा मुहावरे के रूप में सुनी जाती है। लेकिन, यह सवाल फिर भी जिंदा है कि क्या हिन्दी सिनेमा में कभी पानी की वास्तविक समस्या दिखेगी!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'पुष्पा-2' का नया पोस्टर, 'महारागिनी' का टीजर

सिनेमा की दुनिया से आई ये खबरें चर्चा का विषय बन गईं। फिल्म 'पुष्पा 2' साल 2024 की मच-अवेटेड फिल्मों में से एक है। इस फिल्म का नया पोस्टर रिलीज किया गया है। मेकर्स ने बताया है कि का गाना 'कपल सॉन्ग' जल्द रिलीज किया जाएगा। काजोल और प्रभुदेवा की फिल्म 'महारागिनी' का टीजर रिलीज कर दिया गया। काजोल ने अपने इंस्टाग्राम से फिल्म का टीजर शेयर किया है।

अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'पुष्पा 2' साल 2024 की मच-अवेटेड फिल्मों में से एक है। इस फिल्म का नया पोस्टर रिलीज किया गया और इसमें दोनों का रोमांटिक अंदाज नजर आ रहा है। इसके साथ मेकर्स ने बताया है कि का गाना 'कपल सॉन्ग' 29 मई को रिलीज हुआ। अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'पुष्पा 2' 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

काजोल और प्रभुदेवा की फिल्म 'महारागिनी' का टीजर रिलीज कर दिया गया है। काजोल ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से फिल्म का टीजर शेयर किया है। इस फिल्म में काजोल और प्रभुदेवा के अलावा नसीरुद्दीन शाह, संयुक्ता मेनन, जीशु सेनगुप्ता और आदित्य सील भी नजर आएंगे। काजोल और प्रभुदेवा ने साल 1997 में रिलीज हुई फिल्म 'मिनसारा कनवु' में काम किया था।

सिनेमा की दुनिया में 'न तुम हारे न हम हारे'

अशोक जोशी

नेताओं की हार जीत का फैसला भले ही पांच साल में एक बार होता हो, लेकिन बॉलीवुड में शुक्रवार दर शुक्रवार फिल्म के प्रदर्शन के साथ ही उसकी हार जीत का तनाव बढ़ने

लगता है। यह तनाव निर्माता, निर्देशक से लेकर कलाकारों और प्रदर्शकों सभी के चेहरे पर दिखाई देने लगता है। वैसे भी हार जीत सिनेमा जगत का सबसे प्रिय विषय है जो कमोबेश सभी फिल्मों में किसी न किसी रूप में दिखाई दे ही जाता है।

मौ लोकसभा के बहु प्रतीक्षित और बहुचर्चित चुनाव सम्पन्न हो गए। अब सभी को 4 जून का इंतजार है, जब नतीजे आएंगे। इस समय सभी चैनलों पर एग्जिट पोल के माध्यम से कयास लगाए जा रहे हैं कि फलां की सरकार बन रही है और फलां को कितनी सीटों पर संतोष करना पड रहा है। यह तो सिर्फ कयास ही है। असली पिक्चर तो 4 जून को ही साफ हो पाएगी कि राजनीति के बॉक्स ऑफिस पर किसकी फिल्म हिट होगी और किसकी फ्लाप। एग्जिट पोल के अनुमान चाहे जो भी हो। इस पर पक्ष तालियां पीट रहा है जिसकी बढत का आकलन किया जा रहा है। लेकिन, दूसरा पक्ष इसे आंकड़ेबाजी के खेल और चैनलों की चुहलबाजी के अलावा और कुछ नहीं मानता। हालत यह है कि पक्ष और विपक्ष दोनों की और से परस्पर जीत और हार के दावे किए जाने लगे हैं। इस बार बाजी कौन मारेगा यह तो तीन दिन बाद ही पता चलेगा। लेकिन, हार जीत के इन कयासों ने बॉलीवुड की हार-जीत की याद बरबस ताजा कर दी।

नेताओं की हार जीत का फैसला भले ही पांच साल में एक बार होता है। लेकिन, बॉलीवुड में शुक्रवार दर शुक्रवार फिल्म के प्रदर्शन के साथ ही उसकी हार-जीत का तनाव बढ़ने लगता है। यह तनाव निर्माता, निर्देशक से लेकर कलाकारों और प्रदर्शकों सभी के चेहरे पर दिखाई देने लगता है। वैसे भी हार जीत सिनेमा जगत का सबसे प्रिय विषय है जो कमोबेश सभी फिल्मों में किसी न किसी रूप में दिखाई दे ही जाता है।

हमारी फिल्में यही संदेश देती हैं कि बुराई पर हमेशा अच्छाई की जीत होती है। फिल्मों में अच्छाई का प्रतिनिधित्व हीरो-हीरोइन करते हैं, तो बुराई का प्रतीक करने का ठेका अक्सर खलनायक और खलनायिकाओं को दिया जाता रहा है। शायद ही कोई फिल्म ऐसी होगी जो नायक और खलनायक या हार और जीत के फार्मूले के बिना बनी और चली हो। हिन्दी फिल्मों में हार जीत का यह सिलसिला फिल्म के शीर्षक से लेकर गानों और विषय वस्तु में फैला हुआ है। वैसे देखा जाए तो हार और जीत का चोली दामन का साथ है। ऐसी शायद ही कोई फिल्म होगी जिसका शीर्षक केवल 'हार' पर आधारित होगा। जब-जब फिल्मों में हार की बात हुई है जीत ने हमेशा उसका दामन थामे रखा।

अलबत्ता केवल दो लफ्जों 'जीत' पर कई हिंदी फिल्में बन चुकी है। 1949 में मोहन सिन्हा ने 'जीत' शीर्षक से फिल्म का निर्माण किया था जिसमें देव आनंद, सुरैया , कन्हैयालाल, भगवान और मदनपुरी की मुख्य भूमिकाएं थी। 1972 में मद्रासी निर्माता निर्देशक ए सुब्बाराव ने फिर जीत का दामन थाम कर जीत फिल्म का निर्माण किया। इसमें रणधीर कपूर और बबीता ने पहली बार साथ काम किया था। बबीता ही नहीं उनकी बेटी करिश्मा ने भी 'जीत' फिल्म में काम किया है। 1996 में राज कंवर के निर्देशन में बनी साजिद नाडियादवाला की फिल्म 'जीत' में करिश्मा के साथ सनी देओल और सलमान खान ने करिश्मा को जीतने के लिए कोशिश की थी। जिसमें सलमान की जीत हुई थी।

इसी तरह ही 'हार-जीत' शीर्षक से भी एक से ज्यादा फिल्में बनी हैं। 1972 में रेहाना सुल्तान और राधा सलूजा अभिनीत फिल्म 'हार जीत' में दोनों अपने हीरो अनिल धवन को पाने के लिए एक दूसरे के आमने सामने आती है जिसमें एक की हार तो दूसरी की जीत होती है। इसके बाद 1990 में फराह और कबीर बेदी की फिल्म 'हार जीत' आई थी, जो प्रेम कहानी कम और थ्रिलर फिल्म ज्यादा थी । इसे संयोग ही कहा जाएगा कि जीत फिल्म जितनी भी बार बनी सफल रही। जबकि, हार-जीत जब जब बनी हमेशा असफल ही रही। कही शीर्षक में हार का होना तो इसका कारण नहीं है! इसके अलावा प्यार की जीत, जो जीता वही सिकंदर जैसी फिल्मों में जीत को शामिल किया गया था।

फिल्म के शीर्षक ही नही हिन्दी फिल्मों के गानों में भी हार-जीत का बार बार उल्लेख किया गया है। महबूब की फिल्म 'अंदाज' में राज कपूर के सामने गाते हुए दिलीप कुमार जब कहते हैं आज किसी की हार हुई है आज किसी की जीत गाओ खुशी के गीत तो पता चलता है वह जीत के घोड़े पर सवार होकर राज कपूर को उनकी हार के लिए चिढ़ा रहे हैं। जबकि, आखिर में नरगिस को जीतने में राज कपूर ही कामयाब होते हैं। राजेश खन्ना मुमताज की फिल्म 'अपना देश' में राजनीतिक हार-जीत पर आधारित गीत सुन चम्पा सुन तारा कोई जीता कोई हारा खूब चला था। जीतने की आस को सजीव करता गीत जीत ही लेंगे बाजी हम तुम आज भी लोकप्रियता की दौड़ में किसी से पीछे नहीं है ।

आज के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य जैसा कि एग्जिट पोल में कयास लगा रहे हैं कि राजनीति के थिएटर में मोदी नाम की फिल्म चलती रहेगी। तब भी यह तो तय है कि उन्हें उनके दावों के अनुसार चार सौ से ज्यादा सीटें तो मिलने से रही। ऐसे में कांग्रेस भी यही कहकर अपनी जीत मानती रहेगी कि उसने मोदी के चार सौ पार के सपने को पूरा नहीं होने दिया। ऐसे में दोनां ही पक्ष राज कपूर की फिल्म दीवाना का गीत तुम्हार भी जय जय हमारी भी जय जय न तुम हारे न हम हारे गाते दिखाई देंगे।

भारत के गांधी बनाम गांधी का इंडिया !

प्रकाश पुरोहित

यदि जोहानसबर्ग (साउथ अफ्रीका में 'जोबर्ग' कहते हैं) में हैं तो पहला नाम याद आता है नेल्सन मंडेला! एक दिन पहले ही जोबर्ग के सबसे सम्पन्न इलाके में शानदार शॉपिंग मॉल में नेल्सन मंडेला (जिन्हें यहां 'मदीबा' कहते हैं) की स्टेचू देखी थी। तब लगा था कि हमारे यहां गांधी की स्टेचू किसी बड़े से मॉल में लगनी बाकी है, वरना तो उन्हें देश भर में फैले एम.जी. रोड के चौराहों पर ही देखा गया है। उस रोज यह भी देखा कि मदीबा के स्टेचू को थोड़ी देर रुक कर देखने वाले मुझ जैसे कम ही थे, वरना वहां की चकाचौंध में ही लोग गुम थे। आलीशान स्टेचू है और जगमग रोशनी में भव्य नजर आ रही थी।

कोई जोबर्ग में है और 'मंडेला म्यूजियम' ना देखे, ऐसा शायद ही कोई सोचे। अगली सुबह यही काम तय किया और निकल पड़ा म्यूजियम की तलाश में। साउथ अफ्रीका में इंग्लिश बोली तो जाती है, मगर इतनी आसान नहीं है कि फौरन समझ ली जाए। तभी करीब बीस साल का युवा मिला। उससे बातचीत शुरू की।

'जोबर्ग में क्या-क्या है देखने के लिए?' पूछा था मैंने।

उसने एक-एक कर कई जगह के नाम लिए। आसपास के शहरों का भी गाइड बन गया, लेकिन यह चौंकाने वाली बात थी कि उसने एक बार भी नेल्सन मंडेला का नाम नहीं लिया। मंडेला म्यूजियम के तो नजदीक भी नहीं फटका।

'और मंडेला म्यूजियम... वह भी तो यहीं जोबर्ग में?' मैंने ही उससे पूछ लिया।

'हां, वह भी है।' उसने इतने ठंडे अंदाज में बताया कि जैसे कोई खास बात नहीं, जबकि

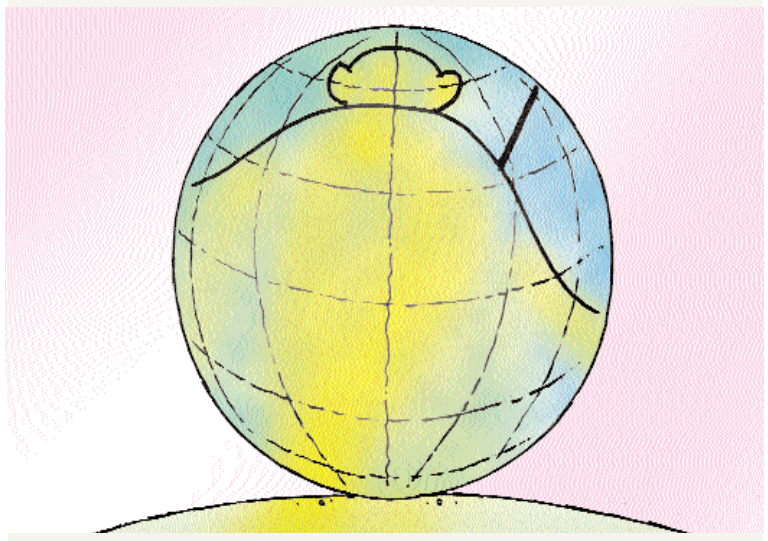

मुझे तो लगा था कि सबसे पहले वह इसी जगह का नाम लेगा और उसके बारे में सब बता देगा, लेकिन उसकी उदासीनता देख थोड़ा अचरज और परेशानी भी हुई।

'तुम इतने बड़े व्यक्ति का नाम कैसे भूल गए...? उनकी वजह से ही तो यह देश आजाद हो सका! दुनिया उन्हें... अफ्रीकी गांधी कहती है। ना ही तुम्हारे चेहरे पर उस नाम की कोई चमक दिखाई दे रही है, ना कोई उत्साह नजर आ रहा है?' मैं उसे कुरेदना चाहता था।

ऐसा लगा उसकी दुःखती रग दबा दी हो 'गांधी की तुलना मदीबा से मत करिए!' वह लगभग गुस्से में बोला।

'क्यों, उनका बलिदान भी तो गांधी से कम नहीं है... पूरी जवानी देश की आजादी के लिए जेल में गवां दी?' उसे याद दिलाया।

'यही बड़ा फर्क है, मदीबा ने जितना दिया था या किया था देश के लिए, ब्याज सहित वसूल लिया है। अब हिसाब बराबर है, बल्कि उनके खाते में अब बदनामी जमा होने लगी है कि आजादी का सबसे बड़ा केक तो उनके हिस्से में ही गया है। आपके इंडिया में गांधी ने अंग्रेजों से लड़ाई में जीवन गुजार दिया और जब देश आजाद हुआ तो गांधी ने सरकार में कोई पद नहीं लिया, जबकि यहां मदीबा खुद तो राष्ट्रपति बन ही गए, उनका पूरा परिवार ही इस देश पर शासन कर रहा है। इसी कारण अब मदीबा की उतनी इज्जत नहीं रह गई है। यहां हर दिन उनके नए घोटाले सामने आ रहे हैं और मदीबा चुप हैं या उस तरफ ध्यान देना ही नहीं चाहते। इसलिए गांधी आज भी पूरी दुनिया में पूजे जाते हैं और मदीबा का नाम भी यहां लेने से लोग कतराते हैं।' जब लड़के ने ये बातें पूरे तैश में बताईं तो कान झनझना गए थे।

अब उस जगह, यानी रोबिन आइलैंड पर हूं, जो जोबर्ग से कई मील दूर बीच समुद्र में है और जहां सिर्फ नाव या बोट से ही जा सकते हैं, जहां मंडेला और साथियों को को छब्बीस साल कैद रखा गया था। इन दिनों यहां गाइड, वे ही कैदी हैं, जो मंडेला के साथ जेल में रहे। इनमें वो साथी भी था, जो मदीबा से भी ज्यादा समय जेल में रहा था। करीब छह ऐसे कैदी हैं यहां, जो बारी-बारी से गाइड बनते हैं। रोबिन आइलैंड जेल घूमने के बाद, जब बाहर निकल रहे थे तो उनमें से एक गाइड से पूछ लिया 'अब तो सब अच्छा हो गया ना, कोई तकलीफ तो नहीं?' लगा जैसे कोई फफोला बह निकला। उन्होंने बेहद दुःखी और दबी आवाज में बताया कि हमें क्या मिला, सिर्फ यह नौकरी? हमें तो यही लग रहा है कि देश भले ही आजाद हो गया है, लेकिन हमारी आजादी तो अभी बाकी है। यहां हमें नौकरी के बहाने रोक दिया गया है ताकि लोगों को सिर्फ मंडेला ही नजर आएं और बाकी किसी का जिक्र भी नहीं हो। साउथ अफ्रीका में सिर्फ एक चेहरा है- मदीबा का! मंडेला तो सरकार चला रहे हैं, क्या कमी है उनके पास? अपने परिवार का ही भला कर रहे हैं और मस्ती मार रहे हैं, और हमें यहां नौकरों की तरह रखा हुआ है। लगता है, जैसे या तो हमें भूल ही गए या फिर जानबूझकर हमें दूर रखना चाह रहे हैं (मार्गदर्शक-मंडल याद आ गया!)। परिवार से भी मिलना मुश्किल हो रहा है हमारा। मंडेला ने एक-एक कर सभी को गायब कर दिया और अब सत्ता के मजे ले रहे हैं, देखिये उनकी पत्नी, जिन्होंने पूरी उम्र साथ दिया, उन्हें छोड़ गई है और उनके खिलाफ खड़ी हो गई है।' और भी ना जाने कितनी बातें बताई थीं उन्होंने, लेकिन लब्बोलुआब यही कि उनके साथी कैदी भी दुःखी हैं बेकद्री से और अपना घर भरने से।

आज ये बातें करीब पंद्रह साल बाद याद आ रही हैं तो वजह यही है कि दुनिया भर में गांधी की लोकप्रियता किसी अंग्रेज की फिल्म से नहीं है। दुनिया में जब आप इंडिया कहते हैं तो लोगों के मुंह से गांधी निकलने लगता है। दुनियाभर में सौ से ज्यादा जगह गांधी की मूर्ति लगी हैं तो यह भारत सरकार ने नहीं लगवाई हैं। अगर रिचर्ड एटनबरो ने फिल्म बनाई थी तो गांधी में कुछ ऐसा अलग नजर आया होगा कि उन्हें चुना। यह फिल्म भी भारत सरकार के कहने या खर्च पर नहीं बनी थी। याद रहे, टाइम पत्रिका ने कितनी बार गांधी को पहले पन्ने पर छापा है। हम कहें अपने बारे में, बेहतर है दुनिया कहे। सरकारी कोशिशों से कोई महापुरुष नहीं बनता, खलनायक ही बनता है, जैसे हिटलर!

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सेक्स वर्कर डे: शोषण आदत में बदल जाता है

मैं ने इस अत्यंत नाजुक विषय पर पूरे सोर्सेस छान लिये। मुझे मिला इस दिवस के इतिहास के रूप में कि 2 जून 1975 को लगभग 100 यौनकर्मी अपनी आपराधिक, शोषणकारी जीवन स्थितियों के बारे में अपना गुस्सा व्यक्त करने के लिये फ्रांस के ल्योन में सेंट-निज़ियर चर्च में एकत्र हुये उनके बैनर पर लिखा था 'हमारे बच्चे नहीं चाहते कि उनकी माँ जेल जाये।' यह दिन यौनकर्मियों की शोषित कार्य स्थितियों की सम्मान और पहचान चाहता है। 'न्याय तक पहुँच' 2023 की थीम थी। 3 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय सेक्स वर्कर अधिकार दिवस भी मनाया जाता है और इसका इतिहास 2001 तक जाता है। उस समय दबाव के बावजूद भी भारत में 25,000 यौनकर्मियों एकत्र हुये थे। कलकत्ता में 50,000 से अधिक यौनकर्मियों ने एक समूह बनाया है। जर्मन में इसे 'हुरेंटाग' (वेश्या दिवस) के नाम से जानते है। 1980 में गैर अपराधीकरण, बेहतर स्वास्थ्य सेवा और हिंसा, भेदभाव से सुरक्षा, 1990 में एड्स से असुरक्षा की वकालत की गई 2003 में 200 से अधिक देशों ने गैर सरकारी संगठन बनाए। (आईएसडब्ल्यूडी)।

कुछ लोगों को बल्कि बहुतों को उनके लिये सुविधा, सुरक्षा, स्वास्थ्य के लिये सुविधा देना बुरा लगता है। उनको लगता है कि हम गलत बात को बढ़ावा दे रहे हैं। कोई अपने शौक से वेश्या नहीं बनती 'कुछ तो मजबूरियां रही होगी...।' हां, अगर आप पढ़ी लिखी है, माडर्न ड्रेस पहनती है, फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती हैं, पार्टियों में बड़े बिजनेसमैन के साथ एस्कॉर्ट बन या मिस्ट्रेस बन के जाती हैं, काम वही करती हैं जो एक यौनकर्मी करती है जिसे आप रंडी कहते है वो ऐस्कॉर्ट या मिस्ट्रेस हो जाती है। आप यकीन मानिये इसमें अच्छे परिवारों की कॉलेज जाने वाली लड़कियां, सॉरी, अब लड़के भी इसमें शामिल है क्योंकि उन्हें अपनी लक्ज़री के लिये पैसे चाहिये।

मेरी परिचित मेरी संस्था से मदद लेती तीन बच्चों की मां, बच्चों की परवरिश के लिये ब्यूटी पार्लर के काम में थी। उसके पास बहुत प्रलोभन वाले बड़े लोगों के ऑफर थे जो कि उसने ठुकरा दिये। बार बार काम भी छोड़ना पड़ा। ज़रूरत बहुत थी पैसों की पर उसने समझौता नहीं किया। एक

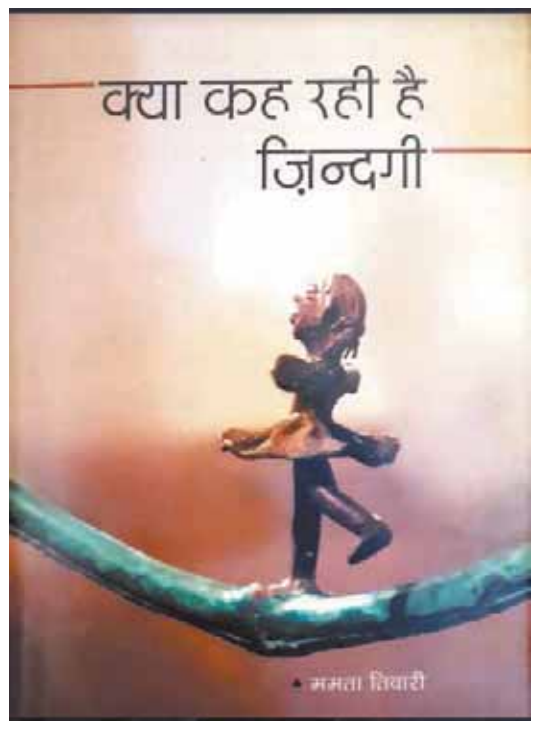

दिन जब घर पहुंचती है तो अपनी सत्रह बरस की लड़की को गायब पाती है। चार दिन पहले उसने उसे नया मोबाइल दिलाया था। मैं उसके साथ मिलकर पता लगाती रही। मेरे देवर जो पुलिस में है उन्होंने मेरी बेचैनी देख समझाया। आप 24 घंटे सब्र रखिये मिल जायेगी। मैंने कहा अगर वो किसी दरिंदे के हाथ पड़ गई तो? उसने सामने वाले सीसीटीवी के फुटेज देखे। वो अपनी सहेली के साथ, चार लड़कों की कार में बैठ रही थी। सुबह वो वापस आ गई कहा सहेली के घर रूक गई थी। अरे भाई मोबाइल क्यों बंद था। बहुत से सवाल दिल में उछल रहे थे, पर माँ खुश थी कि वो सही सलामत वापस आ गई।

फिर भी मैंने कहा उससे अब उसपे नज़र रखो और सारी जानकारी लो। मेरा भी दिल खराब हो गया। क्या उनकी मदद कर मैं ठीक कर ही हूँ। मैं तो उनकी शिक्षा का इंतज़ाम कर रही हूँ पर वो तो किसी और स्कूल में पढ़ने चली गई। छोटे शहरों में छुप कर, बड़े शहरों में खुले आम (मगर बड़े लोगों की पार्टी में) पुरूष यौनकर्मी का चलन है। समाधान क्या है, सोशल मीड़िया पर आसानी से संपर्क होते, धंधा चलाते ऑन लाइन संबंध जोड़ते अब ये लड़के लड़कियाँ औरतें, पुरूष नये रास्ते पर चल पड़े है, सो समाधान आपके हाथ से जा चुका है।

अब एक संवेदनशील, संजीदा बता करूँ जो आपको चुभ सकती है आपके घर में जो यौनकर्मी सालों से है (क्षमा करें आपने उसे सम्मानित ओहदा, पद दे रखा है) कई बार अपनी इच्छा के विरूद्ध ये काम करती है। उसके दर्द का अंदाजा है आपको?

ऐ मज़लूम औरत,
मुझे माफ कर देना
जो, एक दिन मैंने तुम्हें
'बाजारू' कह कर गाली दी थी।
जो, वापस लौट कर
मेरे ही मुँह पर लगी थी,
मैं, भूल गई थी
आईने पर पत्थर मारने से मेरा ही तो
प्रतिबिम्ब टूटता है।
तुम्हें इस खरीद-फरोख़्त से
सिर्फ रोटी मिलती है।
पर मुझे तो बोनस में घर भी
हासिल होता है।

(सेक्स वर्कर के लिए)

कुल मिलाकर यौनशोषण समाज में वेश्या रंडी, तवायफ, जिगेलो, चाइल्ड एब्यूज के रूप में नासूर की तरह फैला हुआ है अंत में, मेरे पास वही बात बचती है पुलिस, प्रशासन सरकार, न्यायपालिका अपना काम कर रही है। सो आप भी करिये बचपन से बच्चों को अच्छे 'संस्कार' देने का कि वो भी इसी समाज रण में उतरेंगे मजबूती इतनी दी जाये कि वो बहके नहीं। आपसे सब शेयर करे। शोषण कभी कभी आदत में बदल जाता है और चस्का गलत रास्तों पे भटका देता है। दूसरों के जीवन की सोचो ये भी कहती है कभी कभी जिंदगी।

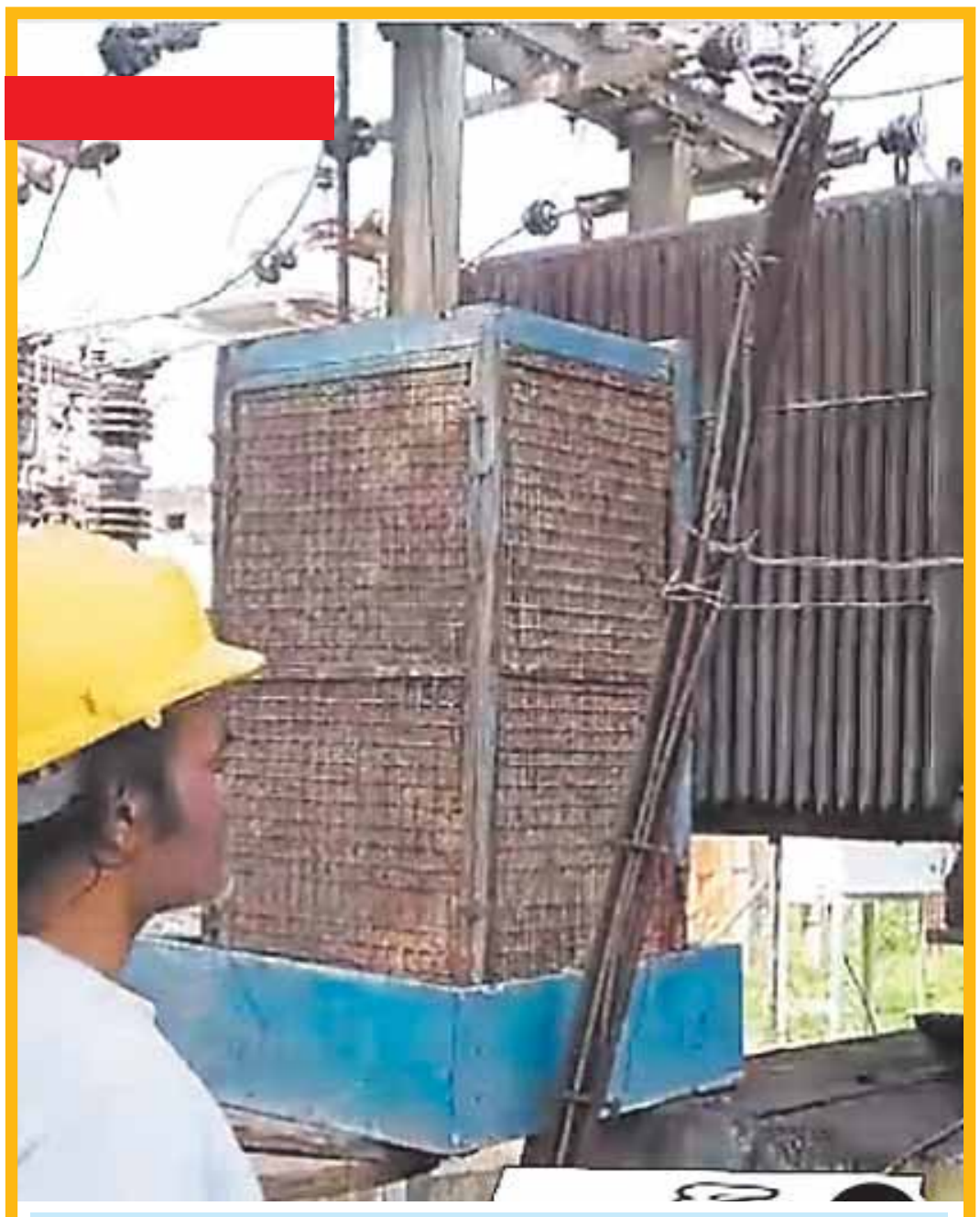

मध्य प्रदेश में भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है और रायसेन भी इससे अछूता नहीं है। इस भीषण गर्मी में यहां बिजली ट्रांसफॉर्मर भी बेहाल हैं। तापमान के बढ़ने से ट्रांसफॉर्मर भी ज़्यादा गर्म हो रहे हैं, जिसके चलते बिजली आपूर्ति में बाधा आने का ख़तरा बना हुआ है। इस समस्या से निपटने के लिए रायसेन में ट्रांसफॉर्मर को ठंडा करने के लिए कूलर लगाए गए हैं। ये कूलर ट्रांसफॉर्मर के आस-पास रखे गए हैं, ताकि ट्रांसफॉर्मर की गर्मी कम हो सके? कूलर लगने की ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

//भाषान्तर//

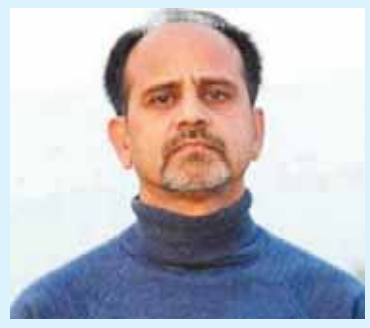

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज अमेरिकन लेखक विलियम मार्टिन की एक कविता का भावानुवाद।

साधारण को जीवंत बनाएं

अपने बच्चों से

असाधारण जीवन के लिए

कोशिश करने का मत कहो।

यह संघर्ष सराहनीय दिख सकता है,
पर यह मूर्खतापूर्ण प्रयास होगा।

इससे इतर
उन्हें साधारण और सामान्य जीवन में मौजूद
जादू और विस्मय को खोजने में मदद करो।
उन्हें सेब, टमाटर और नाशपाती

चखने का आनंद सिखाओ।

अपने पालतू जानवर और

लोगों के अवसान पर
कैसे रोया जाता है बताओ।
उन्हें किसी हाथ के स्पर्श के

आनंद की अनुभूति के बारे में बताओ।
और उनके लिए साधारण को जीवंत बनाएं।
असाधारण को उसके हाल पर छोड़ दें।

धर्म के फैसले... महिला की अनसुनी

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

जो दूसरे देशों में रहने लगे हैं, उनके लिए भी वहां के नियम पालना जरूरी हो जाता है। अब सड़क के किस ओर गाड़ी चलानी है, इस बात पर मर्जी नहीं चलाई जा सकती, लेकिन जब परिवार और धर्म की बात आती है, खास कर पश्चिमी देशों में तो अपने धर्म और उस धरती के नियम कायदे मानना चाहते हैं, जो उनके पुरखों से जुड़े हैं। लोग नहीं चाहते कि उनके मसलों का हल पश्चिमी देशों की सेक्युलर कोर्ट करे और इसी वजह से यहूदी और मुस्लिम समाज की धार्मिक कोर्ट होना कोई नई बात नहीं है।

इंग्लैंड में 'लंदन बेथ डिन' यहूदियों के नियमों के लिए और 'इस्लामिक कोर्ट' शरिया लॉ के लिए लंबे समय से काम कर रही हैं। बेथ डिन और इस्लामिक कोर्ट उन धार्मिक मसलों के लिए शुरू हुई थीं, जिनका हल धार्मिक नियमों से ही मान्य होता। एक तरह से देखा जाए तो सिख कोर्ट इनसे अलग है, क्योंकि शरिया लॉ या रब्बाई लॉ जैसा यहां कोई नियम नहीं है। बहुत मुमकिन है कि सिख कोर्ट उन पारिवारिक मसलों को सुलझाने में कामयाब हो और

सरकारी सेक्युलर कोर्ट में जाने की जरूरत ही न पड़े। सही मायनों में मौजूदा ब्रिटिश संस्थान धर्म की तरफ एक हद तक ऐसा रवैया रखते हैं, जैसे धर्म कोई गैरजरूरी चीज हो और इन मसलों पर ध्यान, उबाऊ या थकाने वाला होता है। सर्वे में सामने आया था कि इंग्लैंड सबसे कम धार्मिक देश है, इसका मतलब यह नहीं कि यहां सब नास्तिक ही हैं, लेकिन लोगों को धर्म इतना जरूरी नहीं लगता कि घर से बाहर उसकी बात भी की जाए... तो फिर आखिर सिख कोर्ट की जरूरत क्यों महसूस हुई! मसला सामने आता है कि तलाकशुदा महिला ने नाबालिग लड़के के बाल कटवाने के लिए हामी भरी, लेकिन अब उस लड़के के पिता को इस बात से दिक्कत है। ऐसे ही कुछ और मुद्दे हैं, जिन्हें धार्मिक लोगों ने आगे करके इस कोर्ट की शुरुआत की है। कहा गया है कि परिवार और धर्म से जुड़े मसलों को यह कोर्ट सुलझाने में मदद करेगी।

खास तौर से जब-जब ऐसी धार्मिक कोर्ट बनती हैं तो खतरा होता है कि महिलाओं के साथ वही पुरुष-सोच व्यवहार किया जाएगा। इस कोर्ट के लिए क्या सिख महिलाओं से राय ली गई थी? ऐसे ढेरों परिवार हैं, जहां बड़े-बुजुर्गों ने पारिवारिक हिंसा में बीवी को बर्दाश्त करने की सलाह दी है। कई महिलाएं हैं, जो इस बात का शुक्र मनाती हैं कि वो इस देश में सेक्युलर कोर्ट से तलाक ले सकीं।

कितने ही किस्से हैं, जहां लड़की अपनी मर्जी के लड़के के साथ शादी करना चाहती थी तो या तो उसे भारत ले जाकर शादी करवा दी या उसकी जान ही ले ली। याद रखना जरूरी है कि मुस्लिम और सिख समाज में ऑनर किलिंग मसला रहा है। बहुत मुमकिन है कि सिख कोर्ट कई केस को सेक्युलर कोर्ट में जाने से पहले ही निपटा देगी और बेहतर भी है कि कोर्ट में सुनवाई के इंतजार में कम वक्त लगेगा। जो खतरा है, उसकी बात भी खास है, क्योंकि जब धर्म के हिसाब से फैसले हुए हैं, महिलाएं ही शिकार हुई हैं। साथ ही अलग-अलग समुदाय नजरिए को अपनाने में झिझक पाते हैं तो मुमकिन है समाज में ऐसी कोर्ट बढ़ें और यह किसी भी लिहाज से अच्छा नहीं होगा।